फरवरी-२०२५ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक
फरवरी-२०२५

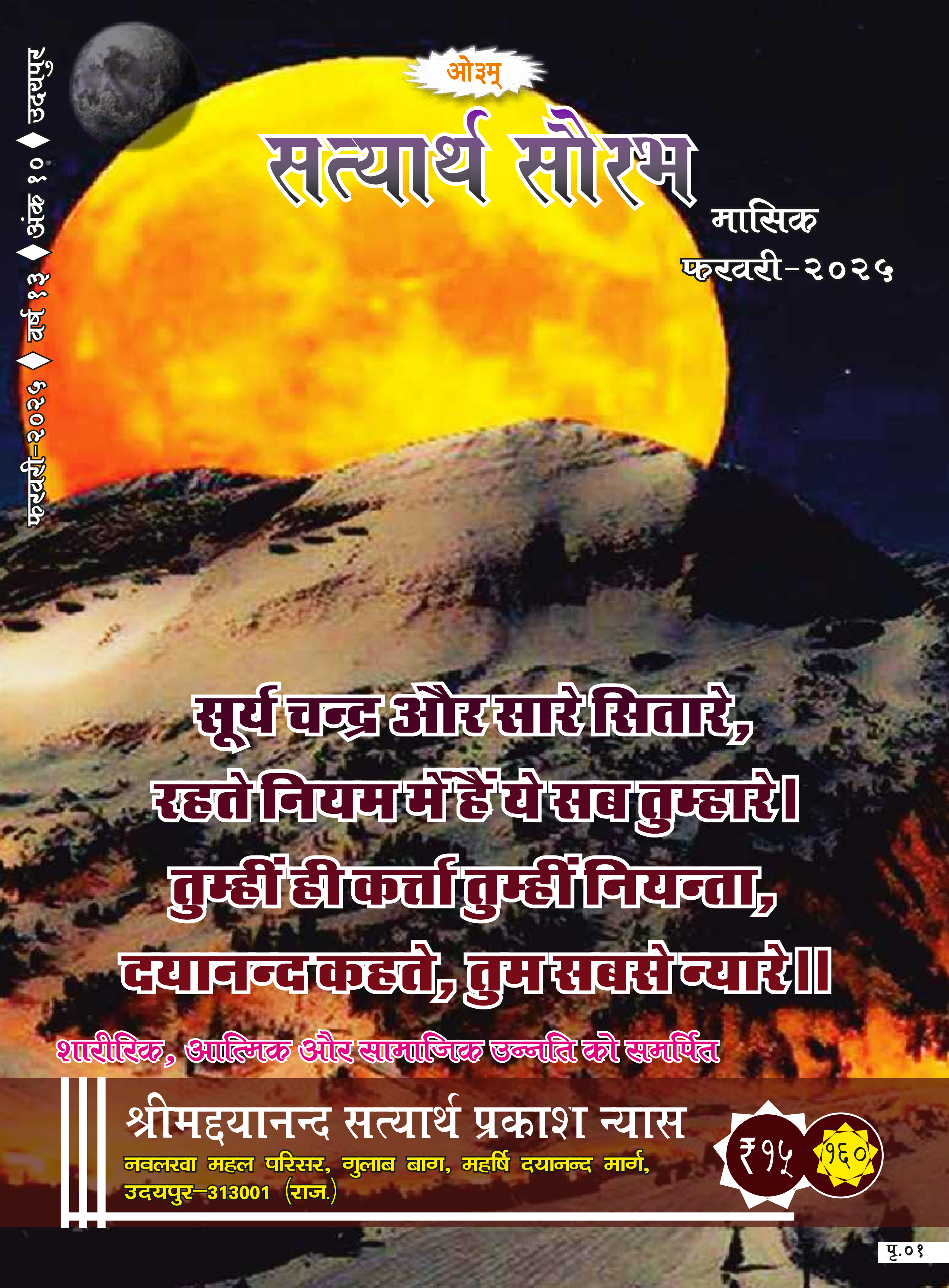

**सूर्य चन्द्र और सारे सितारे,**
**रहते नियम में हैं ये सब तुम्हारे।**
**तुम्हीं ही कर्त्ता तुम्हीं नियन्ता,**
**दयानन्द कहते, तुम सबसे न्यारे॥**

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १६०

24 Carat
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
KITCHEN KING
किचन किंग
CHUNKY CHAT MASALA
चंकी चाट मसाला
GARAM MASALA
गरम मसाला
SHAHI PANEER MASALA
शाही पनीर मसाला
PEACOCK
KASOORI METHI
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
CHANA MASALA
चना मसाला
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ


**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**
डॉ. महावीर मीमाँसक
डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**
अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**
भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग ( ग्राफिक्स डिजाईनर )**
नवनीत आर्य ( मो. 9314535379 )

**व्यवस्थापक**
भँवर लाल गर्ग


| सहयोग ◆ | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1250 |
| आजीवन | - 1500 रु. | $ 300 |
| पंचवर्षीय | - 600 रु. | $ 125 |
| वार्षिक | - 150 रु. | $ 30 |
| एक प्रति | - 15 रु. | $ 10 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
माघ शुक्ल नवमी
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

February - 2025


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।



विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 3000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |



०६ कलियुग में इन्द्रियों ने बदल लिए अपने कार्य

१० 'पिछले पाँच हजार वर्षों में दयानन्द के समान ऋषि नहीं हुआ'

समाचार २९
हलचल ३०

०४ वेद सुधा
१३ उल्लासकर दत्त
१४ भ्रामक ही नहीं घातक भी है भविष्यवाणी
१७ विकासवाद
२१ सत्यार्थ मित्र बनें
२२ श्राद्ध
२५ स्वास्थ्य- मुख दुर्गंध कारण एवं चिकित्सा
२७ कथा सरित- कहानी दयानन्द की
२८ महर्षि दयानन्द का शिवरात्रि बोध



स्वामी
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १३ अंक - १०

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर
मुद्रण

**प्रकाशक**
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

## हम ऐश्वर्य की चोटी पर चढ़ जाएँ

**भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा।**
**मूर्धानं राय आरभे।** - ऋग्वेद १/२४/५

**अर्थ–** हे देव! **(भगभक्तस्य)** भजनीय ऐश्वर्य के बाँटने-वाले **(ते)** आपके **(वयम्)** उपासक लोग हम **(तव)** आपकी **(अवसा)** रक्षा द्वारा **(रायः)** ऐश्वर्य की **(मूर्धानम्)** चोटी को **(उत्-अशेम)** उत्कृष्ट रीति से प्राप्त करें (जिससे कि हम लोग) **(आरभे)** आरम्भ करने योग्य कार्यों में (प्रवृत्त हो सकें।)

मंत्र में भगवान् का एक विशेषण दिया गया है- भग-भक्त। भगभक्त का अर्थ होता है भग अर्थात् भजन करने योग्य, सेवन करने योग्य, सुखदायक, ऐश्वर्य को विभक्त करनेवाला- बाँटनेवाला। भगवान् सेवन करने योग्य ऐश्वर्य के विभक्ता हैं। अपने ऐश्वर्य को वे सबमें विभक्त करते रहते हैं। वे अपने ऐश्वर्य से किसी को वर्जित नहीं रहने देते। क्षुद्र-से-क्षुद्र और बड़े-से-बड़े प्राणी को- सबको प्रभु का ऐश्वर्य यथायोग्य रूप में निरन्तर मिल रहा है। पापियों को भी वह मिल रहा है। उससे कोई भी वर्जित नहीं है तभी तो हम सब प्राणी अपना-अपना जीवन धारण कर रहे हैं और जीवन में न्यूनाधिक सुख प्राप्त कर रहे हैं। जिस क्षण में प्रभु हमें अपने ऐश्वर्य से पूर्णरूप में वंचित करने का निश्चय कर लेते हैं उसके आगे तो हमारा जीवन ही नहीं रह पाता- हमें मृत्यु के मुख में चला जाना पड़ता है। भगवान् का ऐश्वर्य यथायोग्य रूप में सबको बँट रहा है।

मंत्र में कहा गया है कि 'ऐश्वर्य के बाँटनेवाले हे देव! आपके उपासक हम लोग आपकी रक्षा द्वारा ऐश्वर्य की चोटी को प्राप्त करें।' इस मंत्र-वाक्य के 'आपके उपासक हम लोग'- **'ते वयम्'**- इन शब्दों को ध्यान से देखना चाहिए। भगवान् के ऐश्वर्य की चोटी किन्हें प्राप्त होती है, उनका ऐश्वर्य पूर्णरूप से किन्हें प्राप्त होता है? उनको जो भगवान् से कह सकते हैं कि **'ते वयम्'**- हम आपके हैं। जिनकी चित्तवृत्ति सदा भगवान् में लगी रहती है, जो सदा भगवान् को स्मरण रखते हैं, भगवान् का रूप जिनके मन की आँखों के आगे सदा रहता है, इसलिए जो भगवान् के गुणों से आकृष्ट होकर उन्हें अपने चरित्र में धारण करते रहते हैं और इस प्रकार जो भगवान् के अपने बन जाते हैं उन्हें भगवान् का ऐश्वर्य पूर्णरूप से प्राप्त होता है। हमें जो बहुत बार दुःख में दब जाना पड़ता है, हमसे जो सुख-आनन्द बहुत बार दूर भाग गया-सा दीख पड़ता है, जो प्रभु का ऐश्वर्य मिलना कम हो जाता है उसका कारण यह होता है कि हम प्रभु के नहीं रहते, हम प्रभु से दूर चले जाते हैं, हमारा चरित्र प्रभु गुणों से विरहित होकर पापमय बन जाता है। जब तक हम प्रभु

के रहते हैं, प्रभु के सत्य, न्याय, दया, ज्ञान, बल आदि गुणों का समावेश जब तक हममें रहता है जब तक हमें प्रभु का ऐश्वर्य निरन्तर प्राप्त होता रहता है। ज्यों-ज्यों हम प्रभु से परे हटते जाते हैं, त्यों-त्यों हमसे ऐश्वर्य छिनने लगता है और हमारा दुःख-संकट बढ़ जाता है।

मन्त्र में कहा गया है कि 'आपके हम, आपकी रक्षा द्वारा ऐश्वर्य की चोटी को प्राप्त करें।' इसका भाव तो स्पष्ट ही है। जो प्रभु के बनकर रहते हैं उन्हें प्रभु की रक्षा प्राप्त होती है और उस रक्षा में रहकर वे खूब उन्नति करते हैं, उन्हें खूब ऐश्वर्य प्राप्त होता है। जिन्हें भगवान् की रक्षा प्राप्त हो जाती है वे ऐश्वर्य की चोटी पर चढ़ जाते हैं। उनके ऐश्वर्य में कहीं से किसी प्रकार की भी कोई कमी नहीं रहती। वे पूर्ण ऐश्वर्य के अधिपति हो जाते हैं- उनके आनन्द-मंगल में पराकाष्ठा की पूर्णता होती है।

मन्त्र में प्राप्त करने के लिए **'उदशेम'** क्रिया आई है। इसमें **'उत्'** उपसर्ग है। इसे एक प्रकार का क्रियाविशेषण समझना चाहिए। इस उपसर्ग का अर्थ होता है- 'उत्कृष्ट रीति से।' हम जो ऐश्वर्य प्राप्त करें वह उत्कृष्ट रीति से प्राप्त किया जाना चाहिए। उसकी प्राप्ति में हमें किसी प्रकार का छल-छिद्र नहीं करना चाहिए। पवित्र उपायों से हमें ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहिए। प्रभु के बन्दों को जिस तरह चलकर ऐश्वर्य कमाना चाहिए उस तरह चलकर हमें ऐश्वर्य कमाना चाहिए। क्रिया के **'उत्'** उपसर्ग का यही ध्वनितार्थ है।

**'अशेम'** क्रिया का अर्थ हमने 'प्राप्त करें' ऐसा किया है। इसका शब्दार्थ है 'व्याप्त हो'। हम प्रभु की कृपा से ऐश्वर्य की चोटी में, ऐश्वर्य की प्रचुरता में व्याप्त हों, हम ऐश्वर्य में घुस जाएँ। प्रभु की रक्षा के साथ इस क्रिया के प्रयोग की यह ध्वनि है कि जिन्हें भगवान् की रक्षा प्राप्त हो जाती है उन्हें इतना अधिक ऐश्वर्य प्राप्त होता है कि वे ऐश्वर्य में घुस जाते हैं और उस ऐश्वर्य से जनित आनन्द में डूबे रहते हैं।

मन्त्र में ऐश्वर्य का एक नाम **'रै'** आया है। मन्त्र का पद **'रायः'** **'रै'** का ही षष्ठीविभक्ति का एक वचन है। यह शब्द **'रा'** धातु से बनता है। इस धातु का अर्थ दान करना होता है। जो दान किया जाए वह ऐश्वर्य है। **'रै'** के इस धात्वर्थ से यह ध्वनित होता है कि हमें ऐश्वर्य का ग्रहण दान करने के लिए करना चाहिए। हमारे पास जितने प्रकार का भी ऐश्वर्य हो, हमें उसे औरों को देते रहना चाहिए। हमें अपनी शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, आत्मिक शक्ति और प्राकृतिक पदार्थों के संग्रह की शक्ति-सब प्रकार के ऐश्वर्य की शक्ति दूसरों के कल्याण में लगानी चाहिए। जिस प्रकार भगवान् भगभक्त हैं, ऐश्वर्य को बाँटनेवाले हैं, उसी प्रकार हमें भी भगभक्त होना चाहिए। इसी में हमारे ऐश्वर्य की सार्थकता है। प्रभु के भक्त को प्रभु-सा ही होना चाहिए।

ऐश्वर्य किसलिए प्राप्त किया जाता है? ऐश्वर्य के नाम **'रै'** से तो बात सूचित की गई है उसी को मंत्र में प्रकारान्तर से स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया है। भगवान् से प्रार्थना है कि 'हम आपकी रक्षा द्वारा ऐश्वर्य की चोटी को प्राप्त करें, जिससे हम आरम्भ करने योग्य कार्यों में प्रवृत्त हो सकें।' ऐश्वर्य की प्राप्ति का प्रयोजन है आरम्भ करने योग्य कार्यों में प्रवृत्त हो सकें।' ऐश्वर्य की प्राप्ति का प्रयोजन है आरम्भ करने योग्य उत्तम कार्यों को करना। जिन कार्यों को करने से अपने भले के साथ-साथ औरों का भला भी होता है वे उत्तम कार्य हैं और उन्हीं को हमें करना चाहिए। इस प्रकार हमें अपना सब प्रकार का ऐश्वर्य लोकोपकार के, लोगों की भलाई के कार्यों में लगाना चाहिए तभी हमारे ऐश्वर्य की चरितार्थता है, तभी हमारे **'रै'** में **'रै'** पन आता है।

हे मेरे आत्मन्! तू भी अपने को भगवान् का बना ले, फिर तुझे उनकी रक्षा प्राप्त हो जाएगी। उस रक्षा में रहते हुए तुझे पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त होंगे। तेरे सारे दारिद्रय कट जायेंगे। तेरे अपने ही दारिद्रय नहीं कट जाएँगे, तू औरों के भी दुःख-दारिद्रय काटने वाला बन जाएगा।

**लेखक- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति**
**सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**
**साभार- वरुण की नौका**

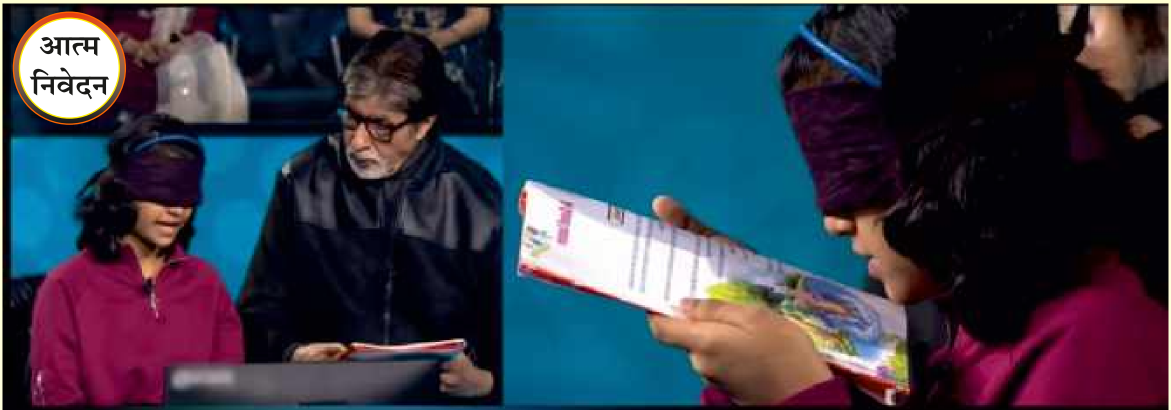


# कलियुग में इन्द्रियों ने बदल लिए अपने कार्य

शास्त्र कहता है कि प्रत्येक इन्द्रिय का अपना-अपना विषय होता है जिसका प्रत्यक्ष उस इन्द्रिय के द्वारा होता है। यह ईश्वरीय व्यवस्था है और अपरिवर्तनीय है। तदनुसार शब्द कान का विषय है तो गंध नाक का, और रस जिह्वा का, रूप आँख का, स्पर्श त्वचा का। अर्थात् कान सुनते हैं, नाक सूँघती है, जिह्वा चखने का कार्य करती है, और आँख के द्वारा देखा जाता है। यह कोई कहे कि वह नाक के द्वारा देख सकता है या देखता है तो आपकी क्या प्रतिक्रया होगी? निश्चित ही आप हँसेंगे अथवा कहेंगे कि वह आपको मूर्ख बनाने का प्रयत्न कर रहा है।

परन्तु सावधान! आप गलत हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कलियुग में इन्द्रियों ने अपना काम बदल लिया है। दावा किया जा रहा है कि कुछ लोग अपनी आध्यात्मिक शक्तियों को उद्‌बुद्ध करके नाक से देखने का कार्य सफलता पूर्वक कर रहे हैं तो कुछ लोगों की त्वचा देखने का कार्य कर रही है। ये लोग अपनी आँख पर तो पट्टी बाँध लेते हैं तथा किसी भी वस्तु को अपने नाक के पास ले जाकर उसके रंग अथवा अन्य विशेषताओं के बारे में बता देते हैं। इन्द्रियों के कार्य परिवर्तन का यह क्रम अगर चलता रहा तो क्या आश्चर्य है कि देवी अंजना के कान से श्री हनुमान के पैदा होने तथा श्री हनुमान के पसीने की बूंद से मछली के गर्भवती होने और मकरध्वज के पैदा होने जैसी घटनाएँ भी सामने आ जाएँ। बस आश्चर्य यही है कि अल्प समय की साधना से तीसरी आँख या दिव्य दृष्टि प्राप्त हो सकती है तो गुरुवर विरजानन्द जी की साधना तो उच्चतम स्तर की थी उन्हें तो अवश्य यह दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जानी चाहिए थी। पर ऐसा हुआ इसका वर्णन कहीं पढ़ने में नहीं आया।

आप हैरान हैं? जी हाँ हैरानी की तो बात है। 'देखना' जिस इन्द्रिय का कार्य है उसको तो पट्टी से बन्द कर देते हैं और नाक के पास वस्तु को लाकर देख रहे हैं, ललाट से रगड़ कर देख रहे हैं। आप स्वयं भी अन्तरजाल पर जाकर जो हम कह रहे हैं उसकी पुष्टि कर सकते हैं। के.बी.सी. का विशाल प्लेटफार्म, अमिताभ जैसे सदी के नायक होस्ट, एक बच्ची वंशी सामने बैठी है जो सूँघ कर वस्तुओं के बारे में शत-प्रतिशत सच बता रही है कि उसका रंग क्या है अथवा उस पर क्या लिखा है। यही क्यों आप अन्तरजाल की दुनिया में प्रवेश करिए ऐसे अनेक कार्यक्रम आपको मिल जायेंगे। इसमें दो प्रकार के लोग आपको मिल जायेंगे एक वे जो यह कहकर यह चमत्कार दिखलाते हैं कि इसमें किसी सिद्धि अथवा साधना का कोई भाग नहीं है यह उनकी ट्रिक तथा अभ्यास है, जबकि दूसरी ओर इसे साधना से प्राप्त सिद्धि कहा जा रहा है। मजे की बात यह है कि इस सिद्धि को प्राप्त करने के लिए कोई जन्म-जन्मान्तर की साधना अपेक्षित नहीं बल्कि कुछ दिन से लेकर कुछ माह तक का ही समय लगता बताया जाता है। कोई इसे वैज्ञानिकता का पुट देने हेतु पीनियल ग्लेंड को एक्टिव करने का नाम लेता है। कोई मिड ब्रेन एक्टिवेशन। यहाँ यह विचार करने योग्य है कि टेलीविजन पर आकर जो लोग इसे हाथ की सफाई मात्र अथवा अभ्यास मात्र बताते हुए किसी भी प्रकार की यौगिक क्रियाओं की उपस्थिति से साफ़ इनकार करते हैं क्या वे ज्यादा सत्यवादी नहीं हैं? क्या

दूसरा वर्ग जो इसे वेद विद्या अथवा योगज सिद्धि के नाम पर प्रचारित कर रहा है, बता पायेगा कि ये प्रथम श्रेणी में आने वाले चमत्कार प्रदर्शन कर्त्ता यह सब कैसे कर पाते हैं? इन्होंने तो संगीत, मैडिटेशन कुछ भी नहीं किया। क्या वे इनके चमत्कारों को सहज भाव से योगज सिद्धि के नाम पर स्वीकार नहीं करेंगे?

महर्षि दयानन्द जी का चमत्कारों के बारे में क्या कहना था, उसमें हमें लगता है कि कोई अस्पष्टता नहीं है। सृष्टिक्रम के विरुद्ध उन्हें कुछ भी स्वीकार्य नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में पाँच प्रकार की परीक्षा के बारे में लिखते हुए सृष्टिक्रम से अनुकूलता को ही प्रमाणस्वरूप स्वीकारते हैं। वे लिखते हैं 'जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह-वह सत्य और जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है वह सब असत्य है।'

आप सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास को देखें। महर्षि दयानन्द ने विभिन्न धार्मिक स्थलों के सम्बन्ध में चमत्कारों के जो दावे किए जाते थे, उनकी धज्जियाँ उड़ा दी हैं। उन्होंने एक सेकेण्ड के लिए भी उनकी संभाव्यता पर विचार नहीं किया क्योंकि वे दृढ निश्चयी थे कि ऐसी कोई सिद्धि केवल योगी को ही प्राप्त हो सकती है। ये कुछ दिन अथवा कुछ मास के अभ्यास के पश्चात् योगज विभूतियों को सिद्ध होना कहने वाले, चाहे वे उन्हें दिव्य दृष्टि कहें, थर्डआई कहें अथवा मिड ब्रेन एक्टिवेशन ऋषि के दृष्टिकोण से तो ये सब भ्रम निर्माण के प्रयत्न मात्र हैं। चमत्कारों की असम्भाव्यता को लेकर महर्षिवर कितने दृढ़ थे यह इस बात से अनुमान लगा सकते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में उन्होंने उनका तीव्र खण्डन किया है। कुछ को उन्होंने स्वयं देखा था और चमत्कार की बात को मिथ्या माना था परन्तु इसके विपरीत अन्य के कथन को भी चमत्कार खण्डन में प्रमाण रूप स्वीकार किया और इससे भी बढ़कर उस सन्दर्भ में भी जहाँ वे स्वयं प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे और न अन्य किसी ने कोई विरुद्ध कथन किया था वहाँ भी अनुमान लगाकर चमत्कार के पीछे क्या वास्तविकता होगी इसे भी प्रस्तुत किया। चमत्कार ऋषि को बिल्कुल अस्वीकार्य थे यह सूर्य की भाँति स्पष्ट है। हम पाठकों को तीनों प्रकार के उदाहरण देना समीचीन समझते हैं।

(१) विन्ध्याचल के विन्ध्येश्वरी मन्दिर के चमत्कारों का खण्डन करते हुए ऋषि लिखते हैं- उत्तर- 'प्रत्यक्ष तो आँखों से तीनों मूर्त्तियाँ दीखती हैं, पाषाण की मूर्त्तियाँ हैं। और तीन काल में तीन प्रकार के रूप होने का कारण पुजारी लोगों के वस्त्र आभूषण पहिराने की चतुराई है और मक्खियाँ सहस्रों-लाखों होती हैं, मैंने अपनी आँख से देखा है।' अर्थात् इस मन्दिर में स्वामी जी स्वयं गए थे तब उन्होंने चमत्कारों का खण्डन किया है।

(२) जगन्नाथ मन्दिर के अनेक चमत्कारों के बारे में उन्हें वहाँ रहने वाले व्यक्ति ने बताया था तो तत्सम्बन्धी चमत्कारों का खण्डन करते हुए स्वामी जी लिखते हैं-

'जिसने बारह वर्ष पर्यन्त जगन्नाथ की पूजा की थी, वह विरक्त होकर मथुरा में आया था, मुझसे मिला था। मैंने इन बातों (वहाँ प्रचलित चमत्कार कथाएँ) का उत्तर पूछा था, उन्होंने ये सब बात झूठ बतलाईं।

(३) स्वामी जी सभी का विस्तार से खण्डन तो करते हैं साथ ही वह अनुमानित ट्रिक भी बताते हैं, जिसका आश्रय ले चमत्कार का सृजन किया जाता है।

जहाँ दुश्मन पर मूर्ति द्वारा भ्रमरे द्वारा आक्रमण की बात कही गयी, वहाँ सम्भावित कारण बताते हुए ऋषि लिखते हैं-

'यह पाषाण का चमत्कार नहीं। किन्तु वहाँ भ्रमरे के छत्ते लग रहे होंगे। उनका स्वभाव है, जब कोई उनको छेड़े, तो काटने दौड़ते हैं। और जो दूध की धारा चमत्कारिक होती थी वह पुजारी की लीला थी।'

(४) जहाँ पितरों द्वारा स्वयं पिण्ड लेने की बात कही वहाँ स्वामी जी इसे असम्भव तो बताते ही हैं सम्भावित ट्रिक भी बताते हैं- पितर अपना हाथ निकालकर पिण्ड लेते हैं, क्या यह भी बात झूठ है? 'यहाँ यह कि कभी किसी धूर्त्त ने पृथिवी में गुफा खोद उसमें एक मनुष्य बैठाया। उसके मुख पर कुश बिछा, पिण्ड दिया हो। उस मनुष्य ने उठा लिया होगा। किसी आँख के अन्धे गाँठ के पूरे को ठगा हो तो आश्चर्य नहीं।'

(५) दक्षिण में एक कालियाकन्त की मूर्त्ति है। वह अब तक हुक्का पिया करती है। जो मूर्तिपूजा झूठी होती तो यह चमत्कार भी झूठा होवे।

उत्तर- झूठा-झूठा-झूठा। यह सब पोपलीला है। क्योंकि वह, मूर्त्ति का मुख पोला होगा। उसका छिद्र पृष्ठ में निकाल के, भित्ति के पार, दूसरे मकान में नल लगा होगा। जब पुजारी हुक्का भरवा, पेंचवान् लगा, मुख में नली

जमाके, पड़दे डाल, निकल आता होगा, तभी पीछेवाला आदमी मुख से खींचता होगा तो इधर हुक्का गड़-गड़ बोलता होगा। दूसरा छिद्र नाक और मुख के साथ लगा होगा। जब पीछे फूकें मार देता होगा तब नाक और मुख के छिद्रों से धुआँ निकलता होगा।

उपरोक्त उदाहरणों से चमत्कारों को लेकर दयानन्द का क्या दृष्टिकोण था स्पष्ट हो जाता है। संसार से अंधविश्वासों का, पाखण्ड का, अविद्या का उन्मूलन आर्यसमाज के मुख्य कार्यों में से एक है, ऐसे में आर्यसमाज में इस बीमारी का तीव्रता से प्रवेश गहन चिन्ता का विषय है। आज हम ऐसी प्रक्रियाओं का स्वागत ही नहीं कर रहे इन्हें वेद विद्या, योग विद्या के रूप में निरूपित करने और प्रचार प्रसार करने में तनिक भी संकोच नहीं कर रहे हैं। यह दुःखद स्थिति है। इस स्थिति पर व्यापक विमर्श अपरिहार्य है।

हम पुनः लिखना चाहते हैं कि जिस इन्द्रिय को जो कार्य ईश्वर प्रदत्त है उसके विरुद्ध नहीं हो सकता क्योंकि यही सृष्टिक्रम है। नाक अथवा त्वचा त्रिकाल में भी नहीं देख सकती। देखेगी तो आँख ही। और यदि आँखें पूर्ण प्रभावी तरीके से बन्द कर दी जायेंगी तो फिर व्यक्ति देख नहीं सकेगा। जो ऐसा दावा कर रहे हैं, जब गहनता से उनके प्रदर्शन को देखते हैं तो ट्रिक भी समझ आती है।

राजस्थान के भँवर सिंह आँख पर पट्टी बाँधकर बच्चों को रंग पहचानना, नोट के नम्बर बता देना इत्यादि-इत्यादि सिखाते हैं। जब एक टेलीविजन चैनल पर उनको यह सब दिखाने को कहा गया तो वही नाक के नीचे ऑब्जेक्ट रखकर उन्होंने पढ़वाना शुरू किया। जब कहा गया कि ऐसा क्यों? तो उनका कहना था कि इसके लिए ६० डिग्री का एंगल होना आवश्यक है। प्रश्न यह उठता है कि यह एंगल आवश्यक क्यों? ९० डिग्री के एंगल पर क्यों नहीं पढ़ा जा सकता? और यहाँ तक कि पीठ के पीछे क्यों नहीं पढ़ा जा सकता? क्योंकि वह तो दिव्य शक्तियों से देखा जाना है, पढ़ा जाना है, जो कि साधना के फलस्वरूप दिव्य दृष्टि, थर्ड आई अथवा पीनियल ग्लैंड वा मिड ब्रेन एक्टिवेशन के रूप में उद्बुद्ध हुयी हैं। पर बात ऐसी है नहीं। इसीलिए यह सब गोरखधन्धा जान पड़ता है।

इसी प्रकार के एक प्रदर्शन में परीक्षण कर्त्ता ने एंगल का ध्यान नहीं दिया तब तक विद्यार्थी सफलतापूर्वक प्रदर्शन करता रहा, पर जैसे ही ९० डिग्री के एंगल पर ऑब्जेक्ट रखा गया प्रदर्शन कर्त्ता विद्यार्थी असफल हो गया। आप स्विमिंग के जो चश्मे आते हैं उन्हें अन्दर रुई लगाकर अथवा ठोड़ी तक का एक टोपा पहना दीजिये प्रदर्शन असफल हो जाएगा, कारण आप समझ सकते हैं।

अब इन चमत्कारों का एक दूसरा पक्ष रखना चाहेंगे। जो लोग मानते हैं कि आँख पर पट्टी बाँधकर अखबार पढ़ लेना, रंग पहचान लेना इत्यादि योगज विभूति और दिव्य दृष्टि हैं तो फिर पाठकगण निश्चय करें कि अधिक चमत्कारिक क्या है? हम नीचे कुछ उदाहरण दे रहे हैं जिन्हें देखकर अनायास दाँतों तले अँगुली दबानी पड़ जाती है, जो इस तथाकथित दिव्यदृष्टि से कई गुना ज्यादा हैरान कर देने वाले चमत्कार हैं। और जो लोग प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर उपरोक्त दिव्यदृष्टि का समर्थन करते हैं उनसे भी निवेदन है कि इन लोगों ने भी राष्ट्रीय चैनल पर दर्शकों के बीच में और कैमरों से रिकॉर्डिंग होते हुए यह चमत्कार दिखाए हैं। अतः उनकी दृष्टि से देखें तो यह तो निश्चित योगज विभूति ही हैं।

**दृश्य १.** एक राष्ट्रीय चैनल का भव्य मंच सजा हुआ है, उस पर एक सज्जन हैं जिनका नाम रवीन्द्र है। वे दर्शकों से कहते हैं कि वे अपने मन में अपने जीवन की किसी भी घटना को बार-बार दोहराएँ और उसका अनुभव करें, वे बताने का प्रयास करेंगे कि वे क्या अनुभव कर रहे हैं। (लेख बहुत लम्बा न हो जाए इसलिए हम एक दो उदाहरण ही यहाँ दे रहे हैं) रवीन्द्र की आँखों पर एंकर द्वारा काले रंग की अपारदर्शी पट्टी बाँध दी जाती है।

रवीन्द्र कहना प्रारम्भ करते हैं कि यहाँ दर्शकों के मध्य में कोई एक महिला है या लड़की है जो काफी भावुक हो रही है, क्योंकि इस समय वह अपने जीवन की एक असफलता का ध्यान कर रही है और उसे लगता है कि वह असफलता उसके जीवन की सबसे बड़ी असफलता थी। वह खड़ी हो जाय। आश्चर्य है कि एक लड़की इस बात को स्वीकार करते हुए खड़ी हो जाती है।

रवीन्द्र और आगे विस्तार में बताते हुए कहते हैं कि यह कोई एंट्रेंस एग्जामिनेशन था फिर और स्पष्ट करते हैं कि यह दिल्ली यूनिवर्सिटी का कॉमन एंट्रेंस टेस्ट था। इस सब में अब सबसे बड़े आश्चर्य का नम्बर आता है। लड़की का नाम बताते हुए रवीन्द्र कहते हैं कि जिसमें शैरिल असफल हो गई।

रवीन्द्र शैरिल को पहले से नहीं जानते। फिर यह कैसे? रवीन्द्र को कौन-सी सिद्धि प्राप्त है? वे लोग विचार करें जो आँख पर पट्टी बाँध अखबार पढ़ने को वेद विद्या बता रहे हैं। रवीन्द्र कौन-सी विद्या में निष्णात् हैं?

रवीन्द्र यहीं पर नहीं रुकते। वे आगे कहते हैं कि यहाँ पर कोई लड़की है जो अपना १५वाँ जन्मदिन याद कर रही है और बड़ी खुश है। और उस समय की उसकी एक मित्र है जो उसके लिए उसके जन्मदिन पर सरप्राइज देती है। दिव्या इस लड़की का नाम है जो दर्शकों के मध्य उपस्थित है और उसकी मित्र का नाम स्तुति है। ध्यान रखिए सारे समय में रवीन्द्र की आँखों पर पट्टी बँधी हुई है जिसको कि उन्होंने एंकर महोदय से परीक्षित भी करवा लिया है कि उसके आर-पार कुछ नहीं दिखता।

**दृश्य २.** यहीं पर एक और सज्जन हैं जिनका नाम ऋषि है। वह एक लड़की छवि को बुलाते हैं और कई प्रकार की प्रक्रिया करते हुए अन्ततोगत्वा उसके एक मित्र का नाम जो उसको अभी-अभी सोचने के लिए और मन में दोहराने के लिए कहा गया है। बता देते हैं इस लड़की और ऋषि का कोई पूर्व सम्बन्ध नहीं फिर भी ऋषि छवि द्वारा मन में सोचा नाम ऐसे बता देते हैं जैसे वे उसका मस्तिष्क पढ़ रहे हों। उसका नाम कार्तिक है। छवि आश्चर्य से स्वीकार करती है कि वह कार्तिक के बारे में ही सोच रही थी। और अब एक बहुत बड़ा चमत्कार जो कि प्रत्यक्ष सारे दर्शकों के साथ हुआ। ऋषि ने कहा कि सब अपना फोन देखें। आश्चर्य उन सभी के फोन में वह कार्तिक नाम आ जाता है।

**दृश्य ३.** एक स्टेज जिस पर दो छोरों पर दो डॉक्टर खड़े हैं। एक डॉक्टर की आँखों पर पट्टी बंधी है। इनके बीच में प्रदर्शन कर्त्ता खड़ा है। प्रदर्शन कर्त्ता जिस डॉक्टर की आँखों पर पट्टी नहीं बंधी है उसके गाल व हाथ पर स्पर्श करता है। उसने कहँ-कहँ स्पर्श किया यह आँख पर पट्टी बंधा डॉक्टर नहीं जान पाता। अब प्रदर्शन कर्त्ता, डॉक्टर की आँख पर पट्टी हटा कर कहता है कि मैंने आपको स्पर्श किया था, बताइये कहाँ-कहाँ किया? आश्चर्य कि वह डॉक्टर ठीक उन्हीं स्थलों को बताता है जहाँ पर प्रदर्शन कर्त्ता ने दूसरे डॉक्टर को छुआ था। इस डॉक्टर के तो वह पास भी नहीं फटका था। यह कौन-सी वेद अथवा योग-विद्या है? आर्यसमाज के उन विद्वानों को विचार करना चाहिए जो पट्टी बंधी आँख से अखबार पढ़ा लेने वा रंग बता देने को अलौकिक शक्ति का प्रस्फुटन मानते हैं।

यहाँ पाठकों को हम यह भी बता दें कि न तो ऋषि और न रवीन्द्र किसी अलौकिक शक्ति का दावा करते हैं वह सीधे-सीधे कहते हैं यह हमारा अभ्यास और हमारी ट्रिक है कोई चमत्कार नहीं है। क्या यह ज्यादा ईमानदारी नहीं है।

**- अशोक आर्य**
**सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर**
**चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५**

**आर्य वीर सत्यनारायण चौधरी का सम्मान**

आर्य समाज केकड़ी द्वारा आर्य वीर सत्यनारायण चौधरी का साफा पहनाकर, पटका ओढ़ाकर व स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि केकड़ी निवासी सत्यनारायण चौधरी ने गत दिनों खो-खो वर्ल्ड कप में निर्णायक की भूमिका निभायी थी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान आर्य वीर दल के प्रान्तीय संचालक श्री भवदेव जी शास्त्री ने बताया कि ऐसी प्रतिभाएँ सम्मान की पात्र हैं।

जहाँ अपूज्य की पूजा और पूज्य का सम्मान नहीं होता वहाँ अकाल पड़ता है मौत अपना ताण्डव दिखाती है तथा भय का वातावरण रहता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उप प्रधान व आर्य समाज केकड़ी के प्रधान अशोक आर्य ने बताया कि बचपन से ही सत्यनारायण चौधरी प्रतिभावान, अनुशासित, जिज्ञासु प्रवृति का आर्यवीर रहा है उन्होंने अपने गुरुजन, आर्य समाज केकड़ी तथा अपने माता-पिता का नाम रौशन किया है।

सत्यनारायण चौधरी ने कहा कि आर्य समाज केकड़ी में रहकर अनुशासन को जीवन में अपनाकर यह मुकाम हासिल किया है। जल्द ही आर्य समाज केकड़ी में खो-खो एकेडमी खोलकर केकड़ी क्षेत्र के बालक, बालिकाओं को प्रशिक्षित कर खेलो इण्डिया में भेजने का काम किया जाएगा।

कार्यक्रम में आर्य समाज के मंत्री कैलाश चन्द महावर, चिरंजी लाल सोनी, तेजमल पंवार, गुलाब चन्द मेघवंशी, सत्यनारायण सोनी, कमलेश अग्निहोत्री, दिलीप सोनी, हेमराज नायक, बजरंग सिकलीगर आदि उपस्थित थे कार्यक्रम का संचालन सत्यनारायण सोनी ने किया।

# 'पिछले पाँच हजार वर्षों में दयानन्द के समान ऋषि नहीं हुआ'

मनमोहन कुमार आर्य

महाभारत का युद्ध पाँच हजार वर्ष से कुछ वर्ष पहले हुआ था। महाभारत युद्ध के बाद भारत ज्ञान-विज्ञान सहित देश की अखण्डता व स्थिरता की दृष्टि से पतन को प्राप्त होता रहा। महाभारत काल के कुछ ही समय बाद ऋषि जैमिनी पर आकर देश से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई थी। ऋषि परम्परा का आरम्भ सृष्टि के आरम्भ से ही हुआ था। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने जिन चार पवित्र आत्माओं को वेदों का ज्ञान दिया था वह चारों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नाम वाले ऋषि थे। इन चार ऋषियों ने एक-एक वेद का ज्ञान ईश्वर से अपनी आत्माओं में प्रेरणा द्वारा प्राप्त कर जिन ब्रह्मा जी को ज्ञान दिया था वह भी ऋषि थे। ब्रह्मा व अग्नि ऋषि से आरम्भ ऋषि परम्परा महाभारत काल के बाद जैमिनी ऋषि पर समाप्त हो गई। जैमिनी जी के कुछ शिष्य अवश्य रहे होंगे परन्तु इतिहास में इनका नाम नहीं मिलता। जैमिनी ऋषि के पाँच हजार वर्षों बाद ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। ऋषि दयानन्द ने आरम्भ के वर्षों में किसी एक गुरु का शिष्यत्व प्राप्त कर ऋषित्व को प्राप्त नहीं किया अपितु आयु के २२वें वर्ष में गृहत्याग से लेकर सन् १८६३ में प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से अध्ययन समाप्त करने तक वह १७ वर्षों की अवधि तक निरन्तर ज्ञान की खोज व विद्या की प्राप्ति के कार्य में एक सच्चे जिज्ञासु के रूप में प्रयत्नशील रहे। वह देश के प्रमुख धार्मिक तीर्थ कहे जाने वाले स्थानों सहित हिमालय पर्वत के अनेक आश्रमों व वहाँ योगियों की खोज में गये और उन विद्वानों से जो जिनसे जितना ज्ञान प्राप्त हो सकता था, प्राप्त किया। उन्होंने योग के गुरुओं से योग भी सीखा था और इससे उन्हें १८ घण्टों तक समाधि अवस्था में ईश्वर का ध्यान करते हुए आनन्द का भोग करने की दक्षता प्राप्त हुई थी। सन् १८६० से पूर्व गुरु विरजानन्द जी से मिलने तक उनमें अर्जित विद्या से और अधिक विद्या प्राप्ति की अभिलाषा थी जो मथुरा में ढाई वर्ष तक गुरु आचार्य स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से विद्या प्राप्त कर सन् १८६३ में पूरी की। स्वामी विरजानन्द जी ने अपने शिष्य दयानन्द जी को देश वा संसार से अविद्या दूर करने की प्रेरणा की थी जिसका उन्होंने आदर्श रूप में पालन किया। ऋषि दयानन्द आदर्श ब्रह्मचारी थे। ब्रह्मचर्य विषयक सभी शास्त्रीय नियमों का भी उन्होंने पूरा पालन किया था। उनका पूर्ण ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन ही मुख्य कारण था जिससे वह वेदज्ञान व योग समाधि द्वारा ऋषित्व को प्राप्त हो सके।

ऋषि वेदमन्त्रों के यथार्थ अर्थों के द्रष्टा को कहते हैं। ऋषि दयानन्द ने न केवल वेदमन्त्रों के यथार्थ अर्थ ही किये हैं अपितु पूर्व के वेदभाष्यकारों यथा सायण एवं महीधर आदि के वेदभाष्यों की समालोचना कर उनमें त्रुटियों व उनके मिथ्यार्थों पर प्रकाश भी डाला है और उनकी सयुक्तिक तार्किक समालोचना की है। ऋषि दयानन्द के वेदों के अर्थ सही हैं इसके लिये उन्होंने अनेक प्रमाणों से युक्त वेदभाष्य किया है जो निरुक्त

के प्रणेता महर्षि यास्क के निर्वचनों, नियम व सिद्धान्तों के अनुकूल है। वेदमन्त्रों के जो अर्थ ऋषि दयानन्द ने किये हैं वह बुद्धि एवं तर्क संगत हैं तथा ज्ञान व विज्ञान की कसौटी पर भी सत्य हैं। ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में हमारे ऋषियों व उसके बाद के लोगों के विचार, मान्यतायें व सिद्धान्त क्या थे व क्या रहे होंगे? सृष्टि के आदिकाल का वह समय वस्तुतः मानव जाति के इतिहास का स्वर्णिम काल था जब आज की तरह का प्रदूषित वातावरण एवं सुविधायुक्त जीवन नहीं था। उस समय लोग कृषि से प्राप्त अन्न, वनस्पति, फल व

गोदुग्धादि का शाकाहारी व शुद्ध भोजन करके अपने जीवन का निर्वाह करते थे। ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के विषय में चर्चा करने के साथ ईश्वर के गुणों का चिन्तन, ध्यान व यज्ञ अग्निहोत्रादि करके वह अपने जीवन को व्यतीत करते थे। वेद का ज्ञान सर्वोत्कृष्ट है साथ ही इसकी भाषा भी सब भाषाओं में उत्तम है। कहा जाता है कि संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने पर अनन्त आनन्द की अनुभूति होती है। यह बात सर्वथा सत्य है। ऋषि दयानन्द जी के जीवन को देखकर इस तथ्य की पुष्टि होती है।

ऋषि दयानन्द सच्चे ब्रह्मचारी, योगी तथा वेदों के सर्वोत्कृष्ट ऋषि व विद्वान् थे। उन्होंने मनुस्मृति में बताये गये धर्म के दस लक्षणों को धारण किया हुआ था। योग के पाँच यम एवं पाँच नियमों को भी उन्होंने धारण किया था। उनके जैसा महापुरुष व योगी इतिहास में दूसरा नहीं हुआ है। उनसे पूर्व के महापुरुषों में अविद्या को दूर करने का दृढ़ संकल्प तथा वैदिक साहित्य का अध्ययन व धर्म-प्रचार का वैसा कार्य अन्य किसी विद्वान् ने नहीं किया जैसा कि ऋषि दयानन्द ने किया है। ऋषि दयानन्द ने ही आर्यों वा हिन्दुओं के आलस्य-प्रमाद तथा विधर्मियों के छल, प्रलोभन एवं अन्य अशुभ उद्देश्यों व कार्यों से विलुप्त व नष्ट हो रही सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा की। यदि वह न आते और वेदों का प्रचार न करते तो हम अनुमान से कह सकते हैं कि आज वैदिक धर्म व संस्कृति के दर्शन होने भी असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होते। ऋषि दयानन्द ने न केवल वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा ही की है अपितु वेदों पर आधारित वैदिक धर्म को विश्व का सबसे श्रेष्ठ धर्म और संस्कृति भी सिद्ध किया है। सभी मत-पन्थ वा धर्मों का आधार ऐतिहासिक पुरुष व महापुरुष हैं जबकि वैदिक धर्म का प्रादुर्भाव ईश्वर व उसके यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता व समाधि अवस्था में उसका साक्षात्कार करने वाले ऋषि हैं। ऋषि दयानन्द ने एक महत्वपूर्ण कार्य यह भी किया है कि उन्होंने वेद एवं सभी शास्त्रों के प्रमाणों से युक्त वैदिक धर्म के व्यापक स्वरूप पर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, पंचमहायज्ञविधि जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। उनके लिखे सभी ग्रन्थ जन-जन की भाषा हिन्दी में हैं जिसे देवनागरी अक्षरों व हिन्दी भाषा का ज्ञान रखने वाला एक साधारण मनुष्य जान व समझ सकता है। वेदों के मन्त्रों के यथार्थ अर्थ करने की योग्यता रखने व जीवन के अन्तिम समय तक वेद प्रचार व वेदभाष्य आदि का कार्य करने के कारण वह सच्चे वेदार्थद्रष्टा-ऋषि, श्रेष्ठ महापुरुष व योगी थे।

ऋषि दयानन्द द्वारा संस्कृत व हिन्दी में वेदभाष्य करने सहित सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना करने से ही ऋषि सिद्ध हो जाते हैं। उन्होंने यह कार्य तो किया ही, इसके साथ ही उन्होंने समाज सुधार, देश की एकता व अखण्डता सहित देश की पराधीनता को दूर कर

इसे आर्यों का स्वतन्त्र देश बनाने का स्वप्न भी देखा था। विदेशी अंग्रेज शासकों से पराधीन आर्यावर्त्त व स्वदेश भारत में वेदों का साहस एवं निर्भीकतापूर्वक प्रचार करना, अन्य मतों के अनुयायियों की शुद्धि कर वैदिकधर्म में सम्मिलित करना, देश की स्वतन्त्रता की बातें करना और स्वराज्य का मन्त्र देना उनकी भारत देश को विशेष देनें हैं। उनके यह कार्य इतिहास में अपूर्व व अन्यतम हैं। ऋषि दयानन्द जी की हमें यह भी विशेषता प्रतीत होती है कि उन्होंने अपने व्यक्तित्व से रक्तसाक्षी स्वामी श्रद्धानन्द, रक्तसाक्षी पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा

हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पं. चमूपति आदि अनेक उच्च कोटि के ईश्वर, वेद और देशभक्त विद्वान् दिये हैं। इन ऋषि दयानन्द के प्रमुख शिष्यों ने धर्म प्रचार सहित शिक्षा जगत्, समाज-सुधार एवं देश की स्वतन्त्रता सहित विधर्मियों के षड्यन्त्रों को निर्मूल करने में भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि ऋषि दयानन्द ने शास्त्रीय वचनों के आधार पर सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में जिस मोक्ष वा मुक्ति का वर्णन किया है, उन्हें आवागमन से रहित वह मोक्षावस्था भी प्राप्त हुई है। यदि उन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ न मानें तो लगता है कि फिर मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी महाभारत काल के बाद कोई भी व्यक्ति व महापुरुष नहीं हुआ और सम्भवतः भविष्य में भी नहीं होगा। इसका कारण यह है कि जिस वैदिक धर्म का पालन करने से मोक्ष प्राप्त होता है उसका ऋषि दयानन्द से उत्तम पालन वा आचरण कोई मनुष्य नहीं कर सकता है। ऋषि दयानन्द को यह श्रेय भी प्राप्त है कि उन्होंने देश व विश्व की जनता को सृष्टिकर्त्ता तथा जीवों के जन्म-मरण के आधार ईश्वर के सच्चे स्वरूप, गुण-कर्म-स्वभाव व उपासना की विधि प्रदान की और वायु को शुद्ध करने सहित रोगरहित, दीर्घायु प्रदान करने वाले व सुखी जीवन के आधार अग्निहोत्र यज्ञ की विधि देकर सर्वत्र उसे प्रचारित एवं प्रचलित किया। ऋषि दयानन्द का जन्मना जातिवाद समाप्त करने, फलित ज्योतिष को पराधीनता व पतन का कारण बताने सहित स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन व उन्हें समाज में समानता का अधिकार दिलाने में भी सबसे अधिक योगदान है।

ऋषि दयानन्द ने आर्य साहित्य का निर्माण करने सहित वेदभाष्य का कार्य भी किया और वेद वचन 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से हमें परिचित कराया। हमें गायत्री मन्त्र व इसका यथार्थ अर्थ भी उन्होंने बताया। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का अर्थ पूरे विश्व वा संसार को श्रेष्ठ गुणों से युक्त करना है जिससे संसार में कोई नास्तिक न हो, कोई अन्धविश्वासी न हो, कोई वेद विरुद्ध आचरण करने वाला न हो तथा कोई ऐसा न हो जो मातृ-पितृ-आचार्यों का आदर व सम्मान न करता हो। ऐसा भी कोई मनुष्य न हो जो मूक पशु-पक्षियों की हत्या कर व करवा कर उनके मांस का भक्षण करता हो, मद्यपान, धूम्रपान, अण्डों का सेवन करता हो तथा ब्रह्मचर्यरहित जीवन व्यतीत करने वाला हो। ऋषि दयानन्द जी का हम व समस्त संसार जितना भी गुणगान करें उतना ही कम है। हम समझते हैं कि महाभारतकाल के बाद के पाँच हजार वर्षों में ऋषि दयानन्द के समान वेदों के ज्ञान से प्रकाशमान व महापुरुषों के दिव्य गुणों से युक्त ऋषि व महर्षि उत्पन्न नहीं हुआ। ऐसे सर्वतो-महान् महर्षि देव दयानन्द को हम कोटिशः सादर नमन करते हैं।

९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

[ कुछ याद उन्हें भी कर लो ]

# उल्लासकर दत्त

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पराधीन भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने का संकल्प लेकर सहस्त्रों लाखों नर-नारियों ने अपने-अपने प्रयत्न किए और फलस्वरुप अनेकों ने जेल के कष्ट को भी सहा होगा। उन सभी को हम नमन करते हैं। उनके कष्ट और त्याग को कम करने की हमारी भावना लेशमात्र भी नहीं है, फिर भी अण्डमान की सेल्यूलर जेल के मुकाबले ये कष्ट कुछ भी नहीं है यह तो मानना ही पड़ेगा।

काला पानी में जिस तरह का कठोर दण्ड दिया जाता था उसके चलते अनेकों ने आत्महत्या कर ली। कई पागल हो गए। इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि जिसको काला पानी की सजा हुई उसने क्या भोगा होगा। परन्तु मातृभूमि के प्रति उनका प्यार ही था कि वह यह सब भी हँसते-हँसते सह गए।

ऐसे ही एक बंगाली युवक उल्लासकर थे। जिनको काला पानी की सजा हुई। तेल निकालने के लिए उनको कोल्हू में जोता गया। उल्लासकर ने खुद लिखा कि 'हमें बैल की तरह धीरे-धीरे चक्कर नहीं लगाने होते थे बल्कि दौड़ते रहना पड़ता था, वरना अधिकारी का सोटा खाना पड़ता था।' उल्लासकर को इसके बाद और भी कठिन काम कच्ची ईंटों को ढोने का दे दिया गया। इस काम के लिए दूध मिलता था, वह भी प्रहरी पी जाते थे। जब इसका विरोध किया तो अधिकारियों के घर पर पानी पहुँचाने का काम जो कि पहाड़ी के ऊपर था दे दिया गया। उल्लासकर ने जब मना किया तो मुकदमा चला। न्यायाधीश ने कहा कि चलो थोड़े दिन अस्पताल में आराम कर लो, परन्तु उन्होंने दृढ़ता से काम करने से इनकार कर दिया तो उनको ८ दिनों के लिए हथकड़ी की सजा देकर के दीवाल पर टांग दिया गया।

इन कष्टों की कोई सीमा नहीं थी। उल्लासकर १०७ डिग्री तक के बुखार में तपते रहे तब जाकर के उनको हथकड़ियों से मुक्त किया और उनकी इतनी पिटाई की गई कि बहुत दूर तक उनकी चीखें बन्दियों के हृदय को द्रवित करती रहीं। यातनाओं ने उल्लासकर को पागल बना दिया। एक दिन उन्होंने जीवन का अन्त करना चाहा तो पहरेदार ने देख लिया और बचा लिया। इसके बाद उल्लासकर को पागलखाने में डाल दिया गया। अण्डमान के बाद उनको मद्रास के पागलखाने में रखा गया।

हमें महसूस केवल यह करना है कि स्वतंत्रता के पश्चात् न जाने कितने लोगों ने बड़े-बड़े पदों को सुशोभित किया पर क्या इस भारत ने उल्लासकर जैसे लोगों को अपने इतिहास में भी कोई स्थान दिया? इससे बड़ा अन्याय क्या होगा? माटी के ऐसे लाल को आज हम नमन करते हैं।

श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

# भ्रामक ही नहीं घातक भी हो सकती है किसी भी प्रकार की भविष्यवाणी

प्रायः अधिकतर व्यक्ति अपने भविष्य के विषय में जानने को बहुत अधिक उत्सुक रहते हैं। भविष्य के विषय में जानने की अनेक पद्धतियाँ भी हमने विकसित कर रखी हैं। लेकिन क्या वास्तव में भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के विषय में सही-सही बतलाया जा सकता है? सम्भवतः नहीं। यदि भविष्य के विषय में जानना सम्भव होता तो हम आने वाली बीमारियों के बारे में जानकर उनके आने से पहले ही उनका उपचार खोज लेते अथवा कर लेते। इससे हम न केवल अनेक दुर्घटनाओं से बच जाते अपितु अपराधों को रोकने में भी सफल हो जाते। साथ ही अपराधियों के विषय में जानकारी प्राप्त करके उन्हें उचित दण्ड देना भी सम्भव हो पाता। यदि हम विवेकपूर्वक विचार करें तो यही पाते हैं कि भविष्य में क्या होगा? ये बतलाने की कोई विज्ञानसम्मत सटीक पद्धति अथवा विधि है ही नहीं। और यदि ये सम्भव है तो भी इससे लाभ नहीं हानि ही होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

किसी के बतलाए अनुसार घटित हो जाना एक संयोग मात्र है। इस सन्दर्भ में एक कहानी याद आ रही है। एक चरवाहा था। वह समझदार भी बहुत था। वर्तमान घटनाक्रम को ठीक से समझकर उसके परिणाम के बारे में पहले ही बता देता था। लोग उससे इतने अधिक प्रभावित थे कि वे उसे पक्का भविष्यवक्ता मानने लगे। उसके भविष्यज्ञान की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। बात राजा के कानों तक पहुँचने में भी देर नहीं लगी। राजा ने चरवाहे को तलब किया और उसकी परीक्षा लेने का मन बना लिया। राजा ने अपनी मुट्ठी में एक टिड्डा बन्द कर लिया और चरवाहे से पूछा कि बता मेरी मुट्ठी में क्या है। ठीक-ठीक जवाब देगा तो इनाम पाएगा वरना मौत के घाट उतार दिया जाएगा। चरवाहा बेचारा कैसे बताए कि राजा की मुट्ठी में क्या है? किसी चीज़ को बिना देखे हम कैसे बता सकते हैं कि वो क्या है? चरवाहा डर के मारे थर-थर काँपने लगा।

संयोग से चरवाहे का नाम भी टिड्डा था। उसने घटनाक्रम को ठीक से समझकर अनुमान लगाया कि

अब जान बचनी मुश्किल है और राजा से कहा, "राजा तेरी मुट्ठी में बस टिड्डे की नन्ही सी जान है और कुछ नहीं।" चरवाहे ने तो बस इतना ही कहा था कि- राजा की मुट्ठी में टिड्डे नामक उस चरवाहे की नन्ही सी जान है लेकिन राजा ने समझा कि चरवाहे ने सही भविष्यवाणी की है और उसने उस चरवाहे को अपने राज्य का प्रमुख ज्योतिषी नियुक्त कर दिया। कई बार ऐसे संयोग सही होने के कारण ही

लोग इन तथाकथित भविष्यवक्ताओं पर विश्वास करने लगते हैं और उनके चंगुल में फँस जाते हैं। एक उदाहरण से इस तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं। कुछ लोग बच्चा पैदा होने से पहले ये बतलाने का कार्य करते हैं कि लड़का होगा या लड़की। साथ ही वे लड़का होने का उपाय भी बतलाते हैं। वैसे ये दोनों ही बातें कानून की दृष्टि से अपराध भी हैं।

इस तरह भविष्य बतलाना गैरकानूनी भी है और ये सब करना और करवाना दण्डनीय अपराध की श्रेणी में आते हैं लेकिन लोग कब मानते हैं? अब यदि वे सबके लड़का होने की भविष्यवाणी कर देते हैं तो भी उनकी लगभग पचास प्रतिशत भविष्यवाणी तो ठीक ही बैठेगी क्योंकि ये स्वाभाविक है। अब जिन परिवारों में लड़का पैदा होगा वे उस भविष्यवक्ता पर अनायास ही विश्वास करने लगेंगे लेकिन इस प्रकार की घटनाओं अथवा संयोगों पर विश्वास करना अंधविश्वास के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं। ये बिलकुल वैसा ही है जैसे परीक्षा में बहुविकल्पात्मक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए केवल पहले, दूसरे, तीसरे अथवा चौथे विकल्प पर निशान लगा देना। इस प्रकार के प्रयास में बिना जानकारी के अथवा बुद्धि का प्रयोग किए बिना भी काफी उत्तर ठीक हो जाते हैं और कई बार बहुत अच्छे अंक भी मिल जाते हैं। लेकिन क्या इसे सही ठहराया जा सकता है?

विवाह से पूर्व कुछ लोग लड़के और लड़की की जन्म कुण्डलियों को मिलवा कर देखते हैं और अपेक्षित

संख्या में दोनों के गुण मिल जाने पर ही विवाह के लिए तैयार होते हैं। लेकिन वास्तविकता ये है कि कई बार लड़के और लड़की के पर्याप्त गुण मिल जाने के उपरान्त भी विवाह सफल नहीं हो पाते। अब इससे क्या सिद्ध होता है? यही न कि कुण्डली-मिलान का कोई औचित्य नहीं। एक सज्जन का तो यहाँ तक कहना है कि यदि जन्म कुण्डलियों का मिलान करने के बाद विवाह सफल नहीं होता है तो जन्म कुंडलियों का मिलान करने वाले व्यक्ति को दोषी मानकर उसे दण्ड दिया जाना चाहिए। बात बिलकुल पते की है लेकिन इस पद्धति की कमियाँ छिपाने के लिए कोई न कोई दूसरा बहाना ढूँढ़ लिया जाता है। गलत बात को सही और सही बात को गलत सिद्ध करने के लिए हमारे पास कुतर्कों की कमी नहीं होती।

वास्तविकता ये है कि कई बार जन्म कुण्डलियों का सही मिलान करने के चक्कर में लोग अच्छे रिश्तों को नजरअन्दाज कर देते हैं और गलत जगह फँस जाते हैं कई बार जिसके बड़े भयंकर परिणाम होते हैं। भविष्य बतलाना केवल लोगों को बरगलाना व बेवकूफ बनाने का उपक्रम है और इसके परिणाम भी बहुत नुकसानदायक होते हैं। कोई विद्यार्थी पास होगा या फेल होगा ये कैसे बतलाया जा सकता है? यदि वह परिश्रम करेगा तो अवश्य पास होगा और यदि परिश्रम नहीं करेगा तो उसके पास होने की सम्भावना भी कम हो जाएगी। लेकिन यदि कोई भविष्यवक्ता इस प्रकार की पास या फेल होने की भविष्यवाणी करता है तो इसके दुष्परिणाम भी कम नहीं होते। यदि किसी अच्छे विद्यार्थी के विषय में भविष्यवाणी कर दी जाए कि वो पास होगा या प्रथम स्थान प्राप्त करेगा तो सम्भव है कि इस भविष्यवाणी के पश्चात् वो विद्यार्थी परिश्रम करना ही छोड़ दे अथवा कम परिश्रम करे और पास होने पर भी अच्छे अंक प्राप्त न कर सके।

इसके विपरीत परिस्थितियों में भी कुछ ऐसा ही होने की सम्भावना बढ़ जाएगी इसमें सन्देह नहीं। यदि

किसी कमजोर विद्यार्थी के विषय में भविष्यवाणी कर दी जाए कि वो पास नहीं होगा तो इससे वो पूरी तरह से निराश हो जाएगा और वो पहले जितना परिश्रम करता था उतना परिश्रम करना भी छोड़ देगा और सचमुच फेल हो जाएगा जबकि वास्तविकता ये है कि परिश्रम करने के लिए प्रोत्साहित करके ऐसे विद्यार्थियों को भी सफलता के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है। कई व्यक्ति इन भविष्यवक्ताओं के चक्कर में पड़कर सही निर्णय लेने की क्षमता ही खो बैठते हैं। कई लोग इन तथाकथित भविष्यवक्ताओं से पूछे बिना कोई काम नहीं करते और उनके चक्कर में पड़कर काम करना ही छोड़ देते हैं और इस तरह से कई बार अच्छे अवसर भी उनके हाथ से निकल जाते हैं। इस प्रकार से स्पष्ट हो जाता है कि भविष्य के विषय में बतलाना न केवल एक कपोलकल्पित विद्या है अपितु इसका दुष्प्रभाव भी कम नहीं पड़ता।

यदि हमें पता चल जाए कि अमुक दिन परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाएगी तो उससे क्या होगा? वैसे तो ये बतलाना सम्भव ही नहीं लेकिन यदि पता लग भी जाए तो हम उसकी मृत्यु से पहले ही बहुत दुखी हो जाएँगे। यदि हमें अपनी मृत्यु के समय के विषय में सही-सही ज्ञात हो जाए तो हम उसी क्षण से जीवन के प्रति उदासीन हो जाएँगे जो किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता। इसलिए हमें इस प्रकार की निरर्थक बातों अथवा अज्ञात भविष्य को जानने की आवश्यकता बिलकुल भी नहीं होती। हमें भविष्य के लिए सही योजना तो बनानी चाहिए लेकिन अनिश्चित भविष्य की चिन्ता बिलकुल नहीं करनी चाहिए। यदि हमने अपना वर्तमान सँवार लिया तो हमारा भविष्य तो अपने आप ही सँवर जाएगा। कुछ चालाक किस्म के लोग दूसरे लोंगों को बेवकूफ बनाकर पैसे ऐंठने के लिए इस प्रकार की विद्या का प्रचार-प्रसार करने में लगे रहते हैं। हमें हर हाल में सकारात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर अंधविश्वास और पाखण्ड से दूर रहना चाहिए अन्यथा हमारा पढ़ाई-लिखाई करना ही बेकार है।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी. १०६ सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - ११००३४
चलभाष- ९५५५६२२३२३

**आजीवन सत्यार्थ मित्र**

**सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।**

**सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि**

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

**1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।**

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास    भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास    डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

# विकासवाद

डार्विन ने शिक्षा दी कि मनुष्य, योनि-विकास के द्वारा, पशु से मनुष्य बना है। उसने योनि-विकास का क्रम इस प्रकार बतलायाः-

(१) प्रथम अमीवा आदि एक घटक जन्तु हुए।
(२) फिर आदिम मत्स्य।
(३) फिर फेफड़े वाले मत्स्य।
(४) फिर सरीसृप मेंढक आदि जलचारी जन्तु।
(५) फिर स्तन्य जन्तु।
(६) फिर अंडज स्तन्य।
(७) फिर पिंडज अजरायुज स्तन्य।
(८) फिर जरायुज स्तन्य।
(९) फिर किम्पुरुष बन्दर, बनमानस, पतली नाक वाले बनमानसों में पहले पूँछ वाले कुक्कुटाकार, फिर बिना पूँछ बाले नराकार, फिर इन्हीं नराकार बनमानुषों की किसी शाखा (लुप्त कड़ी) से जिसका अभी तक ज्ञान नहीं, गूंगे मनुष्य फिर अन्त में उन्हीं से बोलने वाले मनुष्य उत्पन्न हुए। डारविन ने इस योनि विकास के साथ-साथ ही मानसिक विकास (Mental evolution) की भी कल्पना करते हुए प्रकट किया कि मनुष्य में बिना किसी निमित्त पुरुष के स्वतः क्रमशः ज्ञान की वृद्धि हो जाती है।

## इस वाद पर आक्षेप

### पहला आक्षेप

एक विकासवादी प्राणी शास्त्रज्ञ के मतानुसार उद्भिदों से लेकर मनुष्य योनि तक पहुँचने में ६७ लाख योनियाँ बीच की कूती जाती हैं। परन्तु इन ६७ लाख योनियों का विवरण देकर उनमें योनि-विकास प्रमाणित करने की तो कथा ही क्या है उनके नाम भी बतलाना असम्भव है। जर्मन के प्रसिद्ध प्राणि शास्त्रज्ञ अर्नेस्ट हैकल ने एक जगह लिखा है कि 'मछली से मनुष्य होने तक, कम से कम, ५३ लाख २५ हजार योनियाँ बीती हैं। सम्भव है कि यह संख्या इस से १० गुनी हो।'

पुराणों में कुल योनियाँ ८४ लाख वर्णित हैं जिनकी तफसील एक जगह इस प्रकार मिलती हैः-

| | |
|---|---|
| स्थावर योनियाँ | ३० लाख |
| जलचर | ९ लाख |
| कृमि | ११ लाख |
| पक्षी | १० लाख |
| पशु | २० लाख |
| मनुष्य | ४ लाख |
| योग – | ८४ लाख |

1. Lost link by Ernst Haeckal with notes by Dr. H. Gada.

स्थावर योनियों को छोड़ कर जलचर से मनुष्य तक ५४ लाख योनियाँ पुराणों के अनुसार हैं परन्तु हैकल ने सैकड़ों वर्षों के बाद उन्हें केवल ५३.२५ लाख कूता है। फिर यह तो स्पष्ट ही है कि इसमें क्रमशः ज्ञान का ह्रास तो माना जा सकता है परन्तु इसे ज्ञान का विकास किस प्रकार कहा जा सकता है? फिर इन ५३.२५ लाख योनियों के विवरण देने में हैकल ने यह कह कर अपनी असमर्थता प्रकट की है कि 'सम्भव है यह संख्या इससे १० गुनी हो।' थोड़े से मुट्ठी भर स्तन्य जन्तुओं का विवरण देकर, जिसके भीतर की लुप्त कड़ी अभी तक बाकी ही है, योनि-विकास को प्रमाणित समझना, साहस मात्र है।

**दूसरा आक्षेप**

अब तक सैकड़ों जन्तु, योनि रूप में, अन्धे ही पैदा होते हैं। पता नहीं इनका विकास क्यों नहीं हुआ और पशुओं को छोड़ कर अनेक द्वीपों में अब तक

मनुष्य-भक्षक मनुष्य पाये जाते हैं, इनके ज्ञान की, क्रमशः वृद्धि न होने का, समाधान क्या है?

**तीसरा आक्षेप**

विकासवाद की पुष्टि में एक युक्ति यह भी दी जाती है कि मनुष्य के गर्भ की अवस्था भी इस वाद की पुष्टि करती है।

इस युक्ति का तात्पर्य यह है कि गर्भ के प्रारम्भिक मासों में उस (गर्भ) का चित्र उन्हीं जन्तुओं से मिलता-जुलता होता है, जिनसे कि उन्नत होकर योनि-विकास द्वारा, मनुष्य बना हुआ, कहा जाता है। अन्त के मासों में उसमें मनुष्यत्व के चिह्न प्रकट हुआ करते हैं परन्तु यह कथन, अब हाल की खोजों से, ठीक सिद्ध नहीं होता है। 'थियोसोफिकल पाथ' में डॉक्टर बूड़ जौन्स के कथन का हवाला देते हुए, रियान (C. J. Ryan) ने लिखा है- 'हैकल का यह वाद, कि मनुष्य का गर्भ बन्दरों के गर्भ से लगभग अन्त के मासों तक पहचाना नहीं जा सकता, अशुद्ध और त्याज्य है। कुछेक आवश्यक अंग जैसे कि मनुष्य के पाँव, पाँव की एक माँस पेशी (by muscle) के साथ, जो मनुष्य से नीचे के जन्तुओं में नहीं पाये जाते, मनुष्य के गर्भ में यथा- सम्भव प्रारम्भ ही में प्रकट हो जाते हैं, यदि मनुष्य, चार पाँव वाले जन्तुओं आदि की योनियों से गुजर कर बना होता तो वे अवयव अवश्य गर्भ के अन्त में प्रकट होते।' डॉक्टर वूड जौन्स और रियान का भाव उनके ही शब्दों में समझा जा सके इसलिए इन दोनों सज्जनों के लेखों के उद्धरण फुटनोट में दे दिये गये हैं। वूड जोन्स ने अपने लेख में, जैसाकि उन के उद्धरण से मालूम होगा, इस बात को स्पष्ट रीति से वर्णन कर दिया है कि मनुष्य योनि विकास द्वारा नहीं बनी है किन्तु उसकी योनि इन सबसे भिन्न और स्वतन्त्र है।' जब दस मास में रज और वीर्य के मेल से मनुष्य बन जाता है तब उसे लाखों वर्षों में बना हुआ बताना ईश्वरीय शक्ति (Nature) का अपमान करना है।

---

1. Dr. Wood Jones (The Problem of man's Ancestry p. 33.) We are left with the unavoidable impression that the search for his ancestors must be pushed a very long way back. X X X It becomes impossible to picture man as being descended from any form at all like the recent monkeys X X X or from their fossil representatives, X XX He must have started an independent line of his own long before the anthropoid apes and the monkeys developed those specializations which shaped their definite evolutionary destemes"

Referring to Wood Jone's above view Mr.

C. J Ryan writes in the "Theosophical Path" He proves that Haeckels teaching that a human embryo can not be distinguished from that of monkeys until very late developments is wrong and must be abandoned, by showing that certain essentially human characters such as the human walking foot with a leg muscle found in none of the lower animals, are visible in the human embryo at the earliest possible time and not late in the formation as they would be if man had passed these the anthropoidal and quadrupedal stages. (Vedic magn. May 1926 p. 143.)

### चौथा आक्षेप

यह (विकास) वाद प्रत्यक्ष के विरुद्ध और अवैज्ञानिक है। संसार में एक सार्वत्रिक नियम देखा जाता है कि जो चीज उत्पन्न होती है नष्ट हो जाती है, जो चीज बढ़ती है अन्त में घटने लगती है। सूर्य की गरमी बढ़ कर अब घट रही है। मनुष्य उत्पन्न होकर युवा होता है फिर बूढ़ा होने लगता और अन्त में मर जाता है। वृक्षों की भी यही अवस्था होती है। यह कहीं भी नहीं देखा जाता कि कोई चीज बढ़ती ही चली जाय और घटे नहीं। विकास के साथ ह्रास अनिवार्य है। परन्तु डार्विन का विकासवाद एक पहिये की गाड़ी है, ह्रास-शून्य विकास है, इसीलिए अस्वीकर्तव्य है।

### पाँचवाँ आक्षेप

क्रमशः ज्ञान-वृद्धि का सिद्धान्त तो सर्वथा निराधार और क्लिष्ट कल्पना मात्र है। इस सम्बन्ध में अनेक समयों में अनेक व्यक्तियों के द्वारा परीक्षण किये गये और सब का एक ही फल निकला और वह यह था कि क्रमशः ज्ञान वृद्धि का सिद्धान्त अप्रामाणिक है। परीक्षण करने वाले व्यक्तियों के नाम ये हैं-

(१) असुरवानापाल लेयार्ड (Layard) और रौलिन्सन (Rowlinson) दो अन्वेषकों ने नैनवा और वैवलन (असीरिया) के पुराने खण्डहरों को खुदवाया और ईटों पर लिखे हुए पुस्तकालय निकाले। उन पुस्तकों से बानापाल के परिक्षणों का हाल मालूम हुआ। पुराणों में इसी बानापाल को वानासुर लिखा है जिसने इस देश पर आक्रमण किया था और पराजित हुआ था।

(२) यूनान का राजा सेमिटिकल।

(३) द्वितीय फ्रेडरिक (Licchick the Second)

(४) चतुर्थ जेम्स (Jaimes the 4th of Scotland)

(५) अकबर

इन राजाओं के आधिपत्य में अनेक विद्वानों ने १०-१० बारह-बारह (अकबर ने ३० बच्चों पर) छोटे-छोटे नवजात बालकों को शीशों के मकानों में रक्खा और उनकी परवरिश के लिए धाईयाँ रक्खीं और उनको समझा दिया गया कि वे बच्चों को खिला-पिला कर प्रत्येक प्रकार से उनकी रक्षा करें; परन्तु उनको, किसी प्रकार की, कोई शिक्षा न दें, न उनके सामने कुछ बोलें। उन धाईयों ने ऐसा ही किया। इस प्रकार परवरिश पाकर जब बच्चे बड़े हुए तब जाँच करने से मालूम हुआ कि वे सभी बहरे और गूंगे थे', यदि बिना शिक्षा दिये स्वयमेव किसी में ज्ञान उत्पन्न हो सकता होता तो इन बच्चों को भी बोलना आदि स्वयमेव आ जाता। इनका बहरा और गूंगा रह जाना साफ तौर से प्रकट करता है कि स्वयमेव ज्ञान न उत्पन्न होता है न उसकी वृद्धि होती है।

### छठा आक्षेप

वैज्ञानिक भी अब क्रमशः ज्ञान-वृद्धि के मन्तव्य का विरोध करने लगे हैं-

(१) सर आलिवर लाज, क्रमशः ज्ञान वृद्धि के सिद्धान्त का विरोध करते हुए, ऐसा मानने वालों से प्रश्न करते हैं कि सूक्ष्म कला (Fine arts) फोटोग्राफी आदि का, बिना शिक्षा प्राप्त किये, किस प्रकार प्रादुर्भाव हुआ? एक दूसरे विद्वान् वालफोर (Balfour) ने लाज के इस प्रश्न का समर्थन किया है।

"We must admit that the mind which conceived and expressed appropriate

language.

1. Life and Matter by Sir Oliver Lodge p.

(२) डॉक्टर वालेस ने जो विकासवाद के आविष्कारकों में से एक थे, अपने क्रमशः ज्ञान की वृद्धि वाले सिद्धान्त को छोड़ कर एक जगह लिखा है कि जो विचार वेद की ऋचाओं से प्रकट होते हैं और जो अन्य भाषा में प्रकट हुए हैं उनके लेखक उत्तम से उत्तम शिक्षकों और हमारे मिलटनों और टेनीसनों से न्यून नहीं थे। डॉक्टर बालेस के शब्द ये हैं-

143.such ideas, as are everywhere apparent in these Vedic hymns, could not have been in any way inferior to those of the best of our religious teachers and poets to our Milton's and our Tennysons."

(३) डॉक्टर वालेस ने मिश्र और मेसोपोटेमिया की पुरानी कलाओं और लेखों पर विचार करते हुए उनको भी आजकल की अच्छी से अच्छी कलाओं से कम नहीं ठहराया है। उन्होंने इन और ऐसी ही अन्य बातों पर विचार करते हुए परिणाम यह निकाला है कि क्रमशः ज्ञान वृद्धि का कोई प्रमाण नहीं है-

There is therefore no proof continuously in & creasing intellectual power.

1. Social environment and moral progress by Dr Wallace p. 14.

(४ क) गैलटन महोदय ने एक जगह लिखा है- It follows from this that the average ability of the Athenian race is on the lowest possible estima- to very nearly two grades higher than our own (that is about as much as our own race is above that of the African Negro (Heridity Genius by Galton p. 331).

इसका सार यह है कि यूनानियों की मध्य योग्यता नीची से नीची मात्रा में यदि वह कूती जावे तो भी हमारी सभ्यता से दो दरजे ऊपर थी अर्थात् लगभग उतनी ऊँची थी जितनी हमारी जाति अफ्रीका के वहशियों से ऊँची है।

(४ख) प्रोफेसर गोल्ड स्मिथ की एक पुस्तक (The laws of hfe) की समालोचना करते हुए "के" (W.E. Kcy) महोदय ने "गुड-हैल्थ" (Good Health) में लिखा है कि विकासवाद का, अर्थ समझने से पहले, यह बात अच्छी तरह से हृदयांकित कर लेनी चाहिए कि यह वाद न तो यह कहता है कि ईश्वर नहीं है और न इसकी शिक्षा यह है कि मनुष्य बन्दरों से उत्पन्न हुआ है।'

1. Before considering the meaning of evolution it neither climinates God, nor does it teach that monkeys are the ancesters of man (Vedic Mag. Sept. 1923.)

(५) पैरी ने अपने एक ग्रन्थ में और इडवाड कारपेंटर ने भी अपने एक दूसरे ग्रन्थ में' डॉक्टर वालेस और प्रो. "के" की सम्मतियों का समर्थन किया है-

2. The Children of the Sun by Perry.

(६) डारविन भी, जो विकासवाद का आविष्कारक था, अनीश्वरवादी नहीं था। उसने अपनी एक पुस्तक के पहले संस्करण में, जो योनियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में है, लिखा था-

"I should infer from analogy that probably all the organic beings have descended from some one premordial form to which life was first breathed."

परन्तु उसी पुस्तक के दूसरे संस्करण में उसने उपयुक्त वाक्यों को संशोधन करके इस प्रकार लिखा है-

"There is a grandeur in this view of life having been originally breathed by the creator into a few forms or into one."

संशोधित वाक्य में जीवन फेंकने वाले ईश्वर को वर्णन करके डार्विन ने साफ शब्दों में प्रकट कर दिया है कि वह ईश्वर की सत्ता मानता था।

**नोट**– टिंडल ने अपने बेलफास्ट के भाषण में, डार्बिन के पहले संस्करण में प्रयुक्त किये हुये "आदिम योनि" (P'remo- rdial Form) शब्दों

पर, आक्षेप किया था कि उस (डार्विन) ने किस आधार पर यह कल्पना की है?

1. Origin of Species by Charles Darwin.
2. Lectures and Essays by Tyndall p. 30.

जो कुछ विकास-वाद के सम्बन्ध में ऊपर लिखा गया वह यह प्रकट कर देने के लिये पर्याप्त है कि यह वाद अनेक त्रुटियों और कमियों से पूर्ण है और इस वाद के दो सिद्धान्त तो अत्यन्त आपत्तिजनक हैं-

(१) एक योनि से दूसरी योनि का उत्पन्न होना-
(२) क्रमशः ज्ञान की वृद्धि (Mental Evolution)-

और अधिकतर वैज्ञानिक भी अब इसके विरुद्ध हो गये और बराबर होते चले जाते हैं। इसलिए डार्विन ने ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के सिद्धान्त में, जो बाधा अपने विकासवाद की अन्वेषणा से पहुँचाने का यत्न किया था, वह यत्न निष्फल सा सिद्ध हो रहा है।

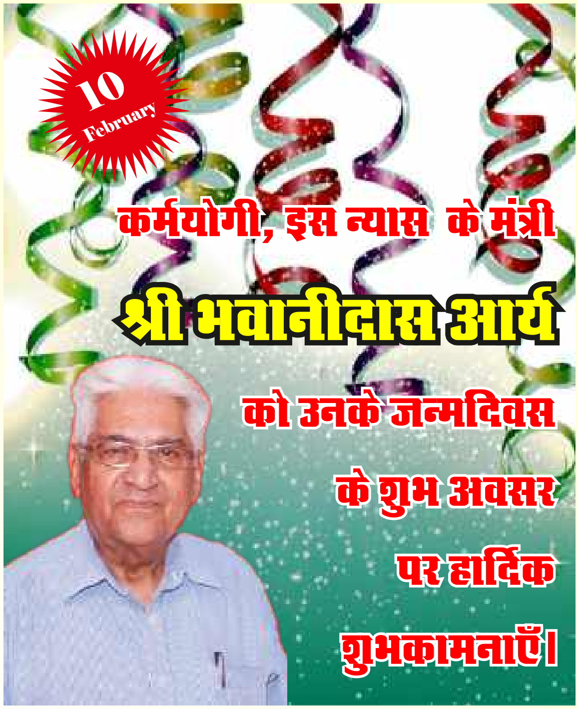


# सत्यार्थ मित्र बनें

**न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।**

**आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।**

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

# श्राद्ध

श्राद्ध शब्द बना है 'श्रद्धा से। 'श्रद्धा शब्द की व्युत्पत्ति 'श्रत् या 'श्रद् शब्द से 'अङ् प्रत्यय की युति होने पर होती है, जिसका अर्थ है- 'आस्तिक बुद्धि। 'सत्य धीयते यस्याम् अर्थात् जिसमें सत्य प्रतिष्ठित है।

छान्दोग्योपनिषद् ७/१६ व २० में श्रद्धा की दो प्रमुख विशेषताएँ बताई गई हैं- मनुष्य के हृदय में निष्ठा/आस्तिक बुद्धि जागृत कराना व मनन कराना।

मनुष्य समाज की समस्या यह है कि वह दिनों-दिन विचार और बुद्धि के खेल खेलने में तो निष्णात होता जा रहा है, किन्तु श्रद्धा का अभाव उसके जीवन को दुःख और पीड़ा से भरने का बड़ा कारक है। विचार के बिना श्रद्धा पंगु है व श्रद्धा तथा भावना के बिना विचार। वह अंध-श्रद्धा हो जाती है क्योंकि विवेक के अभाव में यही पता नहीं कि श्रद्धा किस पर व क्यों लानी है या कि उसका अभिप्राय क्या है। इसीलिए ध्यान देने की आवश्यकता है कि मूलतः श्रद्धा का शाब्दिक अर्थ हृदय में निष्ठा व आस्तिक बुद्धि है२.. बुद्धि के साथ श्रद्धा।

यह तो रही 'श्राद्ध के अर्थ की बात। पितरों से जोड़ कर इस शब्द की बात करें तो उनके प्रति श्रद्धा, कुल- परिवार व अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, अपनी जातीय-परम्परा के प्रति श्रद्धा, माता-पिता-आचार्यों के प्रति श्रद्धा की भावना से प्रेरित होकर किए जाने वाले कार्यों को 'श्राद्ध कहा जाता है। यदि हमने अपने घर-परिवार व समाज के जीवित पितरों व माता-पिता के शारीरिक-मानसिक-आत्मिक सुख की भावना से कुछ नहीं किया तो मृतक पितरों के नाम पर भोजन करवाने मात्र से हमारे पितरों की आत्मा शान्ति नहीं पाएगी। न ही पितर केवल भोजन के भूखे होते हैं। वे अपने कुल व सन्तानों में मूलभूत आदर्श देखने में अधिक सुख पाते हैं जिसकी कामना कोई भी अपनी सन्तान से करता है। इसलिए यदि हम में वे गुण नहीं हैं व हम अपने जीवित माता-पिता या बुजुर्गों को सुख नहीं दे सकते तो निश्चय जानिए कि तब श्राद्ध के नाम से किया जाना वाला सारा कर्मकाण्ड तमाशा-मात्र है।

संस्कृत न जानने वालों को बता दूँ कि 'पितर शब्द संस्कृत के 'पितृ से बना है जो पिता का वाचक है, किन्तु माता व पिता (पेरेंट्स) के लिए संस्कृत में 'पितरौ शब्द है। इसी से हिन्दी में 'पिता व जर्मन में 'Vater (जर्मन में 'ट का उच्चारण 'फ होने से उच्चारण है 'फाटर') शब्द बना है व उसी से अंग्रेजी में 'फादर शब्द बना। संस्कृत में 'पितरौ" क्योंकि माता व पिता (अर्थात् 'पेरेंट्स) का वाचक है तो जर्मनी में इसीलिए 'पितर शब्द के लिए 'Manes (उच्चारण कुछ-कुछ मानस शब्द जैसा) शब्द कहा जाता है जबकि इसी से अंग्रेजी में शब्द बना Manes (उच्चारण मैनेस्)। 'माँ से इसकी उच्चारण व वर्तनी साम्यता देखी-समझी जा सकती है।

समस्या यह है कि श्राद्ध को लोग कर्मकाण्ड समझते व करते हैं और वैसा कर वे अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। जबकि मृतक पितरों के नाम पर पूजा करवा कर यह समझना कि किसी को खाना खिलाने

से उन तक पहुँच जाएगा, यह बड़ी भूल है। जीवित पितरों को सुख नहीं देकर मृतक् पितरों के नाम पर कर्मकाण्ड करना ही गड़बड़ है। कर्मकाण्ड श्राद्ध नहीं है। कोई भी कर्मकाण्ड मात्र प्रतीक-भर है मूल जीवन में अपनाने योग्य किसी भी संस्कार का। यदि जीवन में उस संस्कार को आचरण में नहीं लाए तो कर्मकाण्ड केवल तमाशा है। घरों परिवारों में बुजुर्ग और बड़े-बूढ़े दुःख पाते रहें, उनके प्रति श्रद्धा का वातवरण घर में लेशमात्र भी न हो और हम मृतक पितरों को जल चढ़ाते रहें, तर्पण करते रहें या उनके नाम पर श्राद्ध का आयोजन कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते रहें, इस से बड़ा क्रूर व हास्यास्पद पाखण्ड और क्या होगा।

वस्तुतः मूल अर्थों में श्राद्ध, श्रावणी उपाकर्म के पश्चात् अपने-अपने कार्यक्षेत्र में लौटते समय वरिष्ठों आदि के अभिनन्दन सत्कार के लिए होने वाले आयोजन के निमित्त समाज द्वारा प्रचलित परम्परा थी, जिसका मूल अर्थ व भावना लुप्त होकर यह केवल प्रदर्शन-मात्र रह गई है। मूल अर्थों में यह 'पितृयज्ञ का वाचक है व उसी भावना से इसका विनियोग समाज ने किया था, इसीलिए इसे पितृपक्ष भी कहा जाता है; किन्तु अब इसे नेष्ट, कणातें, अशुभ, नकारात्मक दिन, शुभकार्य प्रारम्भ करने के लिए अपशकुन आदि मान लिया गया है। हमारे पूर्वजों से जुड़ा कोई दिन अशुभ कैसे हो सकता है, नकारात्मक प्रभाव कैसे दे सकता है, अपशकुन कैसे कर सकता है? क्या हमारे पूर्वज हमारे लिए अनिष्ट चाह सकते हैं? क्या किसी के भी पूर्वज उनके लिए अशुभकारी हो सकते हैं? माता-पिता के अतिरिक्त संसार में कोई भी अन्य सम्बन्ध केवल और केवल हितकारी व निस्स्वार्थ नहीं होता। सन्तान भी माता-पिता का वैसा हित कदापि नहीं चाह सकती जैसा माता-पिता अपनी सन्तान के लिए स्वयं हानि, दुःख व निस्स्वार्थ बलिदान कर लेते हैं, उसे अपने से आगे बढ़ाना चाहते हैं, उसे अपने से अधिक पाता हुआ देखना चाहते हैं और ऐसा होता देख ईर्ष्या नहीं अपितु सुख पाते हैं। ऐसे में 'पितृपक्ष (पितृयज्ञ की विशेष अवधि) को नकारात्मक प्रभाव देने वाला मानना कितना अनुचित व अतार्किक है।

आज समाज में सबसे निर्बल व तिरस्कृत कोई हैं, तो वे हैं हमारे बुजुर्ग। वृद्धाश्रमों की बढ़ती कतारों वाला समाज श्राद्ध के नाम पर कर्मकाण्ड कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ले तो यह भीषण विडम्बना ही है। यदि हम घर परिवारों में उन्हें उचित आदर-सत्कार, मान-सम्मान व स्नेह के दो बोल भी नहीं दे सकते तो

श्राद्ध के नाम पर किया गया हमारा सब कुछ केवल तमाशा व ढोंग है। यों भी वह अतार्किक व श्राद्ध का गलत अभिप्राय लगा कर किया जाने वाला कार्य तो है ही। जब तक इसका सही अर्थ समझ कर इसे सही ढंग से नहीं किया जाएगा तब तक यह करने वाले को कोई फल नहीं दे सकता (यदि आप किसी फल की आशा में इसे करते हैं तो)। वैसे प्रत्येक कर्म अपना फल तो देता ही है और उसे अच्छा किया जाए तो अच्छा फल भी मिलता ही है।

मृतकों तक कोई सन्देश या किसी का खाया भोजन नहीं पहुँचता और न ही आपके-हमारे दिवंगत पूर्वज मात्र खाने-पीने से संतुष्ट और सुखी हो जाने वाले हैं। भूख देह को लगती है, आत्मा को यह आहार नहीं चाहिए। मृतक पूर्वजों को भोजन पहुँचाने (जिसकी उन्हें आवश्यकता ही नहीं) से अधिक बढ़कर आवश्यक है कि भूखों को भोजन मिले, अपने जीवित माता पिता व बुजुर्गों को आदर सम्मान से हमारे घरों में स्थान, प्रतिष्ठा व अपनापन मिले, उन्हें कभी कोई

दुख सन्ताप हमारे कारण न हो। उनके आशीर्वादों के हम सदा भागी बनें और उनकी सेवा में सुख पाएँ। किसी दिन वृद्धाश्रम में जाकर उन सबको आदर सत्कार पूर्वक अपने हाथ से भोजन करवा उनके साथ

समय बिताकर देखिए, कितने आशीष मिलेंगे। परिवार के वरिष्ठों व अपने माता-पिता आदि की सेवा सम्मान में जरा-सा जुट कर देखिए, कैसे घर पर सुख सौभाग्य बरसता है।

श्राद्ध के माध्यम से मृतकों से तार जोड़ने या आत्माओं से सम्बन्ध जोड़ने वाले अज्ञानियों को कौन बताए कि पुनर्जन्म तो होता है, विज्ञान भी मानता है; किन्तु यदि इन्हें आत्मा के स्वरूप और कर्मफल सिद्धान्त का सही-सही पता होता तो ये ऐसी बात नहीं करते। आत्मा का किसी से कोई रिश्ता नहीं होता, न आप हम उसे यहाँ से संचालित कर सकते हैं। प्रत्येक आत्मा अपने देह के माध्यम द्वारा किए कर्मों के अनुसार फल भोगता है और तदनुसार ही अगला जीवन पाता है। आत्मा को 'रिमोट ऑपरेशन से 'कंट्रोल करने की उनकी थ्योरी बचकानी, अतार्किक व भारतीय दर्शन तथा वैदिक वाङ्मय के विरुद्ध है।

जीवन ही श्राद्धमय हो जाए तब भी गलत नहीं, अपितु बढ़िया ही है। वस्तुतः इस लेख का मूल अभिप्राय यह है कि श्राद्ध क्या है, क्यों इसका विधान किया गया, इसके करने का अर्थ क्या है, भावना क्या है आदि को जान कर इसे करें। श्राद्ध के नाम पर पाखण्ड व ढकोसला नहीं करें अपितु सच्ची श्रद्धा से कुल-परिवार व अपने पूर्वजों के प्रति, अपनी जातीय-परम्परा के प्रति, माता-पिता-आचार्यों के प्रति, समाज के बुजुर्गों व वृद्धों के प्रति श्रद्धा की भावना से प्रेरित होकर अपने तन, मन, धन से तथा निस्स्वार्थ व कृतज्ञ भाव से जीवन जीना व उनके ऋण को अनुभव करते हुए पितृयज्ञ की भावना बनाए रखना ही सच्चा श्राद्ध है।

साभार- सोशल मीडिया

**सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा**

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 336/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

G Pay
BHIM UPI

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

– सम्पादक

**दान की अपील**

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
BHIM UPI

# मुख दुर्गन्ध कारण एवं चिकित्सा

प्रायः देखा जाता है कि मुख दुर्गन्ध के रोग से बहुत से व्यक्ति पीड़ित रहते हैं। यह दुर्गन्ध सड़ी हुई मछली, सड़े हुए अण्डे व मल की तरह होती है। कभी-कभी यह दुर्गन्ध इतनी तीव्र होती है कि पास में बैठने वाले व्यक्ति लिए सहन करना मुश्किल हो जाता है। इसका मुख्य कारण तो भोजन के पश्चात् मुख व दाँतों की ठीक से सफाई नहीं करना है, लेकिन इसके अतिरिक्त भी बहुत से कारणों से मुख दुर्गन्ध का होना पाया जाता है। जिनका वर्णन नीचे दिया जा रहा है।

**1. मुख की अस्वच्छता-** मुख की अच्छी प्रकार सफाई नहीं करने से भोजन के कण दाँतों के बीच में व जीभ के पीछे तथा नीचे छिपे रहते हैं। ये कण सड़कर जीवाणुओं को पैदा करते हैं। इन जीवाणुओं से निकलने वाली बदबूदार गैस के कारण मुख से दुर्गन्ध आने लगती है।

**2. नकली दाँत-** जिन लोगों ने बनावटी दाँत लगवाये हैं, उनके नकली दाँतों व मसूढ़ों के बीच में भोजन के छोटे-छोटे कण जमा होकर, सड़कर दुर्गन्धयुक्त गैस पैदा करते हैं, जिससे मुख में दुर्गन्ध आने लगती है। जिन्होंने बनावटी दाँत लगवाये हैं उन्हें भोजन के पश्चात् दाँत निकालकर मुख व दाँतों की अच्छी प्रकार से सफाई करनी चाहिए।

**3. नाक का संक्रमण-** कभी-कभी नाक के एक विशेष भाग में संक्रमण हो जाता है। संक्रमण में पूय (मवाद) पैदा हो जाता है और कभी-कभी छोटे-छोटे कीड़े भी पैदा हो जाते हैं, जिनसे दुर्गन्ध आने लगती है और सिरदर्द भी हो जाता है।

**4. मसूढ़ों का संक्रमण-** मुख से दुर्गन्ध का एक प्रमुख कारण मसूढ़ों का संक्रमण (पायरिया) है। इसमें मसूढ़े पक जाते हैं उनमें पस (मवाद) बन जाता है। दाँत ढ़ीले पड़ जाते हैं। मुख से निरन्तर दुर्गन्ध आती रहती है। इसके लिए मसूढ़ों की सफाई व आयुर्वेदीय ग्रन्थों में बताई औषधियों द्वारा मंजन व नीम, बबूल, करंज आदि की दातुन से मसूढ़ों की सफाई से संक्रमण को रोका जा सकता है।

**5. श्वास नालिका व फेफड़ों का संक्रमण-** जब फेफड़ों में संक्रमण होता है तो मुख से दुर्गन्ध आने लगती है क्योंकि संक्रमण से पूय पैदा होता है और पूय में दुर्गन्ध होती है। उस पूय से होता हुआ श्वास जब बाहर निकलता है तो वह दुर्गन्धयुक्त होता है। इसके लिए जीवाणु नाशक औषधियों के प्रयोग से संक्रमण को रोककर दुर्गन्ध से बचा जा सकता है।

**6. मुख का सूखापन-** मुख से निकलने वाला लार जीवाणुरोधी होता है। यह लार मुख को गीला

रखते हुए भोजन के छोटे-छोटे कणों तथा जीवाणुओं की सफाई करता रहता है। उपवास या व्रत की अवस्था में अधिक समय तक मुख सूखा रहने से लार द्वारा जीवाणुओं की सफाई नहीं हो पाती। इससे मुख में जीवाणुओं की संख्या बढ़कर दुर्गन्ध आने लगती है। मुख खुला रखकर सोने वालों का भी लार सूख जाता है। भोजन को चबाकर नहीं खाने वाले लोगों की भी लार कम बनने से जीवाणुओं की सफाई नहीं हो पाती और मुख से दुर्गन्ध आने लगती है।

**7. गुर्दों की खराबी-** शरीर के रक्तगत कुछ मल पदार्थों को मूत्र द्वारा रक्त से बाहर निकालने का कार्य गुर्दों के द्वारा सम्पन्न होता है। गुर्दों के विकृत होने पर ये अपना यह कार्य करना बन्द कर देते हैं। परिणामस्वरूप शरीर से मलों के बाहर नहीं निकलने से रक्तगत मलों की मात्रा बढ़ती चली जाती है और यह दूषित रक्त परिभ्रमण करता हुआ जब फेफड़ों में पहुँचता है तो फेफड़ों से निकलने वाले प्रश्वास में इन मलों की दुर्गन्ध आने लगती है। ऐसी स्थिति गम्भीर वृक्क रोगियों में होती है।

**8. विबन्ध-** यदि किसी को कब्ज रहता है तो उसके पेट में मल सड़ता रहता है। और उसकी गन्ध श्वास छोड़ते समय श्वास के साथ बाहर आती है।

**9. कुछ विशिष्ट खाद्य पदार्थ-** कुछ खाद्य पदार्थ जैसे प्याज, लहसुन आदि को यदि कच्चा ही खाया जाय तो मुख से दुर्गन्ध आने लगती है। इन पदार्थों में सल्फर की मात्रा अधिक होती है और इस सल्फर से निकलने वाली गैस के कारण दुर्गन्ध आती है। अधिक सल्फर युक्त पदार्थ खाये जाने पर आँतो के द्वारा अवशोषित कर लिये जाते हैं। ये पदार्थ रक्त के साथ जब फेफड़ों में आते हैं तो फेफड़ों से निकलने वाले श्वास में इनकी दुर्गन्ध आती है। कच्चे प्याज व लहसुन के खाने से केवल श्वास में ही नहीं पसीने व मूत्र में भी दुर्गन्ध आने लगती है। इनको खाने के बाद लगभग तीन दिनों तक इनकी दुर्गन्ध आती रहती है। इनको भूनकर खाने से दुर्गन्ध कम हो जाती है।

**10. हार्मोन्स का असंतुलन-** हमारे शरीर में बहुत सी अंतःस्रावी ग्रन्थियाँ होती हैं। इनसे निकलने वाले रसायन को हार्मोन्स कहते हैं। ये हमारे शरीर की विभिन्न कार्य प्रणालियों को प्रभावित करते हैं। कुछ विशिष्ट हार्मोन्स के असंतुलन के कारण शरीर की सूक्ष्म रक्त वाहिनियों में प्रोटीन युक्त रक्त जीवाणुओं की वृद्धि हो जाती है। इससे मुख में बढ़ी हुई जीवाणुओं की संख्या से दुर्गन्ध उत्पन्न हो जाती है। अधिकतर महिलाओं में मासिक धर्म के पूर्व ऐसा होता देखा गया है।

## चिकित्सा

मुख दुर्गन्ध से स्थायी लाभ के लिए उसके कारण को समझकर उसका इलाज करना आवश्यक है। लगभग 80% व्यक्तियों में दुर्गन्ध का कारण मुख की सफाई का अभाव होता है। किसी भी भोज्य पदार्थ को खाने के पश्चात् मुख को किसी मुलायम ब्रश व अच्छे मंजन व टूथपेस्ट से साफ करना चाहिए। अमृत धारा के ४.५ बूँद पानी में डालकर कुल्ले करना चाहिए। मीठे व मैदे के बने पदार्थों का सेवन कम करना चाहिए। दन्त चिकित्सक से दाँतों का परीक्षण कराते रहना चाहिए। दाँतों में यदि कैविटी हो तो उसका उपचार कराना चाहिए। यदि विबन्ध रहता हो तो रात्रि में 'चिफला चूर्ण' ६ ग्राम गर्म जल से लेवें। पायरिया व अन्य दाँत व मसूढ़ों के रोगों में 'दशन संस्कार चूर्ण' का दाँतों व मसूढ़ो पर लेप करने के ३० मिनट बाद कुल्ले करें। इलायची खाने से भी मुख दुर्गन्ध दूर होती है।

– वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्सा
१३, श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर-६ उदयपुर

# कहानी दयानन्द की

## कथा सरित

पाखण्ड के विरुद्ध स्वामी जी का अभियान अहर्निश चल रहा था और उसके कारण धीरे-धीरे पाखण्ड और अविद्या का नाश हो रहा था। छलेसर के एक जमींदार ठाकुर मुकुंद सिंह स्वामी जी से अत्यन्त स्नेह रखते थे। स्वामी जी के उपदेशों के फलस्वरूप ही मूर्तिपूजा से उन्होंने किनारा कर लिया था। यहाँ तक कि उनकी बिरादरी के लोग उनके बहिष्कार की धमकी देने लगे, परन्तु मुकुंद सिंह जी ने उसकी कोई परवाह नहीं की।

१३ नवम्बर सन १८७० में स्वामी जी छलेसर पहुँच गए। स्वामी जी का स्वागत बहुत बड़ी शोभायात्रा के माध्यम से किया गया। यहाँ भी पौराणिक पण्डित स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने आते थे और परास्त होते जाते थे। यहाँ पर इस्लाम मत को मानने वाले मौलवी और काजी इस्लाम की श्रेष्ठता प्रतिपादन करने आए परन्तु उनका हाल भी पौराणिक पण्डितों जैसा ही हुआ। छलेसर में श्री महाराज ने पाठशाला भी स्थापित की। जिसमें पण्डित कुमार सेन को अध्यापक नियत किया। तीन दिन में ही पाठशाला में २० विद्यार्थी हो गए। प्रातः और सायं सन्ध्या और अग्निहोत्र करना पाठशाला का नियम था।

मार्च सन् १८७२ में स्वामी जी महाराज फिर काशी पधारे और उपदेश कार्यों में व्यस्त रहने लगे। एक दिन जब सत्संग चल रहा था तो अचानक स्वामी जी बोले कि अभी थोड़ी देर में एक कौतूहलजनक घटना होने वाली है। सब लोग सोचने लगे कि ऐसी कौन सी घटना है, जिसके बारे में स्वामी जी पहले से ही जानते हैं। सब इंतजार करने लगे। कुछ समय पश्चात् एक ब्राह्मण स्वामी जी के लिए भोजन और पान लेकर के आया और उनसे भोजन ग्रहण करने की प्रार्थना की। स्वामी जी ने भोजन के लिए तो मना कर दिया परन्तु बहुत आग्रह करने पर पान ले लिया। पान लेकर स्वामी जी ने उसे खोलकर देखना चाहा तो वह ब्राह्मण भाग गया। वस्तुतः भोजन और पान दोनों में ही उसने विष मिला रखा था। क्या ही आश्चर्य और विडम्बना की बात है कि जो महापुरुष समस्त मानवता के लिए अमृत लेकर के आया, उसे विष देने में हमने कोई संकोच नहीं किया।

स्वामी जी जब मुगलसराय पहुँचे तो वहाँ एक पादरी लाल बिहारी दे उनसे धर्म विषय पर बातचीत करने आया। जिसमें प्रमुख विषय यह था कि पादरी का कहना था कि प्रभु यीशु ऐसे ईश्वर पुत्र थे कि वे सब लोगों के पाप अपनी पीठ पर लेकर चले गए। श्री महाराज का कहना था कि पाप का प्रायश्चित उसका फल भुगते बिना नहीं हो सकता। उनका कहना था कि यह जानकर कि ईसा पर विश्वास लाने मात्र से उनके सब पाप दूर हो जाएँगे, लोग पाप करने में अधिक प्रवृत्त होंगे। वस्तुतः कृतकर्म का फल भोगना ही पड़ता है। इस व्यवस्था में किसी भी प्रकार से अन्यथा नहीं हो सकता।

मुगलसराय में स्वामी जी केवल १० दिन रहे फिर कलकत्ते की ओर चले गए।

**प्रस्तुति- नवनीत आर्य**
**नवलखा महल, उदयपुर**

## महर्षि दयानन्द का शिवरात्रि बोध

शिवरात्रि की रात थी, गहन अंधियारा,
महर्षि ने देखा सत्य का उजियारा।
मन्दिर में बैठे, भक्ति से सजग,
आँखों में उमड़े, प्रश्नों का बलग।

वह शिव जो सृष्टि का आधार है,
क्या मूर्ति में है, या निराकार है ?
मन में उठी जिज्ञासा अपार,
जगाने लगी अन्तर्मन का विचार।

पुजारी ने चढ़ाए दूध और मिष्ठान,
पर दयानन्द के मन में था गूढ़ ज्ञान।
क्या पत्थर खाएगा, क्या वह पीएगा ?
या बस भक्ति का मूक दर्शक बनेगा ?

क्षणिक था यह मूर्तिपूजा का मोह,
महर्षि ने पाया सत्य का छोर।
शिव नहीं बस पत्थर की प्रतिमा,
वह है विश्व में व्याप्त परमात्मा।

ज्ञान की लौ से मिटा अज्ञान,
शिव को देखा परम सत्यान।
शिवरात्रि का यह बोध महान्,
बन गया धर्म का अद्भुत विधान।

सन्देश दिया महर्षि ने सबको,
सत्य का साधक बनाओ।
नहीं है शिव कहीं, मूर्ति के पास,
वह है सत्य, जो हृदय के आसपास।

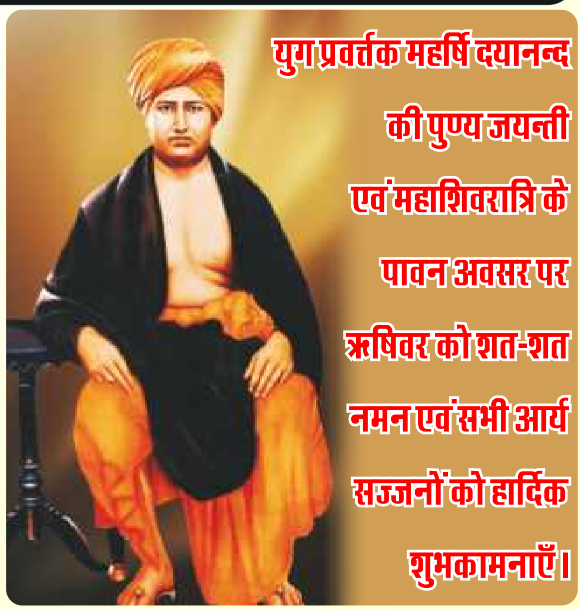

### आर्ष क. गुरुकुल महाविद्यालय, नरेला ने मनाया 71 वाँ वार्षिकोत्सव

प्रातः स्मरणीय, स्वनामधन्य , स्व. पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी महाराज (पूर्वनाम आचार्य भगवानदेव जी) द्वारा अपनी समस्त पैतृक कृषि भूमि (२५० बीघा) दान में देकर ईस्वी सन् २०५४ में स्थापित आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, नरेला (दिल्ली) ने पौष मास

कृष्ण पक्ष सप्तमी तिथि, विक्रमी संवत् २०८१, रविवार; तदनुसार २२ दिसम्बर २०२४ को अपना ७१वाँ वार्षिक उत्सव पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी महाराज, आचार्य श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष गुरुकुल महाविद्यालय, गौतमनगर, न.दि. की अध्यक्षता में बड़े हर्षोल्लास तथा धूमधाम से मनाया। उत्सव हेतु १५ दिसम्बर २०२४ से २२ दिसम्बर २०२४ तक प्रतिदिन प्रातः ०७:०० बजे से ०९:०० बजे तक स्वामी आनन्द स्वरूप जी महाराज के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहुति आचार्य विश्वपाल जी, गुरुकुल दाधिया (राज.) के उद्बोधन के साथ की गई।

तत्पश्चात् उत्सव में पधारे अतिथियों तथा गुरुकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारिणियों और उनके अभिभावकों ने सुस्वादु प्रीतिभोज का आनन्द लेकर गुरुकुल के विशाल एवम् प्रांगण में खिली सुनहरी धूप में बैठकर ब्रह्मचारिणियों द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण में सहभागिता करी। चंडीगढ़ से पधारे डा. विजयपाल शास्त्री जी तथा जयपुर से पधारे आचार्य दीपक शास्त्री जी ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज तथा वैदिक मान्यताओं पर आधारित सुमधुर भजनों के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया ।

अन्त में गुरुकुल के महामंत्री श्री सोमवीर शास्त्री जी ने सभी अभ्यागतों एवं दानी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया । शांतिपाठ के साथ उत्सव का सफल समापन हुआ।

### मकर संक्रान्ति पर्व हर्षोल्लास से मनाया

आर्य समाज हिरण मगरी; उदयपुर में दिनांक १४ जनवरी २०२५ को मकर संक्रान्ति पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। पर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मंत्री वेद मित्र आर्य ने कहा कि पर्व गांठ को कहते हैं जो गन्ने में रस का संचार करती इसी तरह पर्व हमारे जीवन में रस, आंनद का संचार करतें हैं। जितने काल में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है उस काल को एक सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी के मकर राशि में परिभ्रमण प्रवेश को मकर सौर संक्रान्ति कहते हैं। आज दिन दान पुण्य का भी बड़ा है। श्रीमती सरला गुप्ता ने आज के दिन विशेष शीत में गुड़ तिल खाने के महत्व के साथ कहा कि गुड़ की तरह हमें परिवार समाज में मिठास बनाए रखनी है।

इस अवसर पर आर्य समाज के पुरोहित, प्रचार मंत्री कवि लेखक

रामदयाल मेहरा को उनकी साहित्यिक सामाजिक सेवाओं के लिए आर्य समाज की ओर से सम्मानित किया गया। डा.अमृत लाल तापड़िया ने श्री मेहरा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

पं. रामदयाल जी के पोराहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रीमती एवं श्री मुरली धर गट्टानी, शारदा गुप्ता, अम्बालाल सनाढ्य, ललिता मेहरा,डा अमृत लाल तापड़िया, कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती चन्द्रकला आर्य रमेशचंद्र जायसवाल, भंवर लाल आर्य, नरेंद्र माथुर, ओमप्रकाश कुमावत राजकुमार गुप्ता आदि यजमानों ने आहुतियाँ दी। इस अवसर पर दयानन्द कन्या विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रेमलता मेनारिया, नाजुक बंसाली, अलका मेहता, मोनिका गोड़ सहित छात्राओं ने भागीदारी की।

- रामदयाल; प्रचार मंत्री

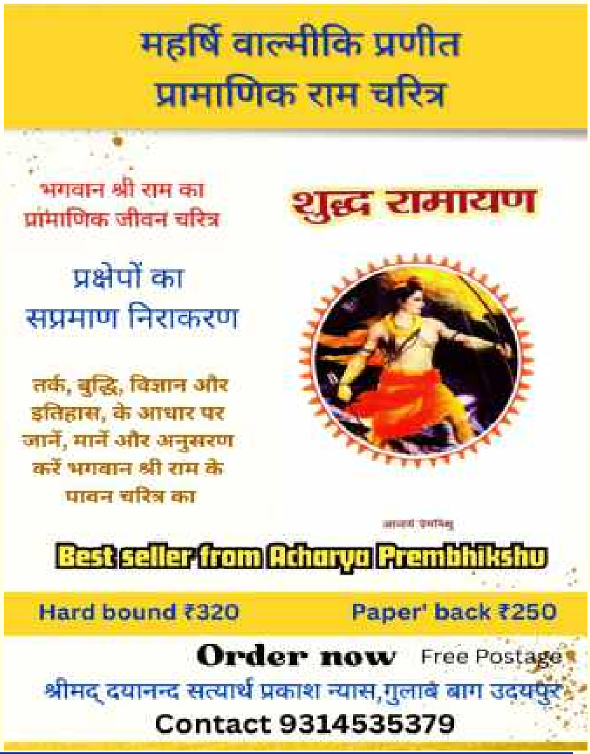

## आर्य समाज मन्दिर के लोकार्पण के अवसर पर यजुर्वेद परायण यज्ञ

नगर आर्य समाज मन्दिर बीकानेर के नवीन भवन के लोकार्पण महोत्सव कार्यक्रम की शुरुआत यजुर्वेद परायण यज्ञ से हुयी। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य कन्या गुरुकुल, हसनपुर के आचार्य श्री शिव कुमार शास्त्री ने कहा कि यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है, इसके माध्यम से ही मानव पूर्ण सुखी और आनन्दमय जीवन जी सकता है और सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में पिरोकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को सार्थक कर सकता है। कन्या

गुरुकुल हसनपुर की ब्रह्मचारणियों ने वेद मन्त्रों का सस्वर मधुर उच्चारण कर श्रद्धालुओं को भाव विभोर किया।

दिनांक २१ को लोकार्पण मुख्य अतिथि माननीय सत्यपाल सिंह जी द्वारा किया गया। माननीय श्री अर्जुन राम जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, नगर विधायक श्री जेठानन्द जी व्यास और कोलकाता से पधारे श्री चाँदरत्न जी दमानी के सान्निध्य में हुआ।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश वो अमूल्य ग्रन्थ है जिसे पढ़ने से व्यक्ति स्वदेश प्रेम और स्वतंत्रता के लिए ज्वाला प्रज्ज्वलित होकर सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर हो जाता है तथा ये ज्ञान का भण्डार है' ये शब्द आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग के नूतन भवन के लोकार्पण करते हुए श्री सत्यपाल सिंह; पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं कुलाधिपति, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ने अपने उद्बोधन में कहे।

श्री अर्जुन राम मेघवाल ने दिल्ली से ऑन लाइन सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज का शिक्षा और महिला शिक्षा में खासतौर से पिछड़े और गरीब तबके के लिए अभूतपूर्व योगदान रहा है और बीकानेर क्षेत्र में इस आर्य समाज ने आजादी आन्दोलन के समय जो प्रयास किए वे सराहनीय है। इस क्षेत्र में गणपति जैसे विद्वान् एवं शास्त्र महारथी रहे हैं।

दिल्ली से पधारे स्वामी प्रणवानन्द जी ने गुरुकुलीय शिक्षा अपनाने पर जोर दिया। कोलकोता से पधारे दानवीर श्री चाँदरत्न जी ने कहा कि वेदों की और लौटे बिना मानव कल्याण सम्भव नहीं। नगर विधायक श्री जेठानन्द व्यास ने कहा कि आर्य समाज का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है।

नगर आर्यसमाज का ११२ वर्ष का इतिहास बताते हुवे प्रधान महेश आर्य ने कहा कि रामदेव पाठशाला के माध्यम से शिक्षा का १९४७ तक प्रचार व प्रसार किया।

कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ के साथ वैदिक उद्घोष के साथ हुआ।

– भगवती प्रसाद; मंत्री, आर्य समाज मंदिर, बीकानेर

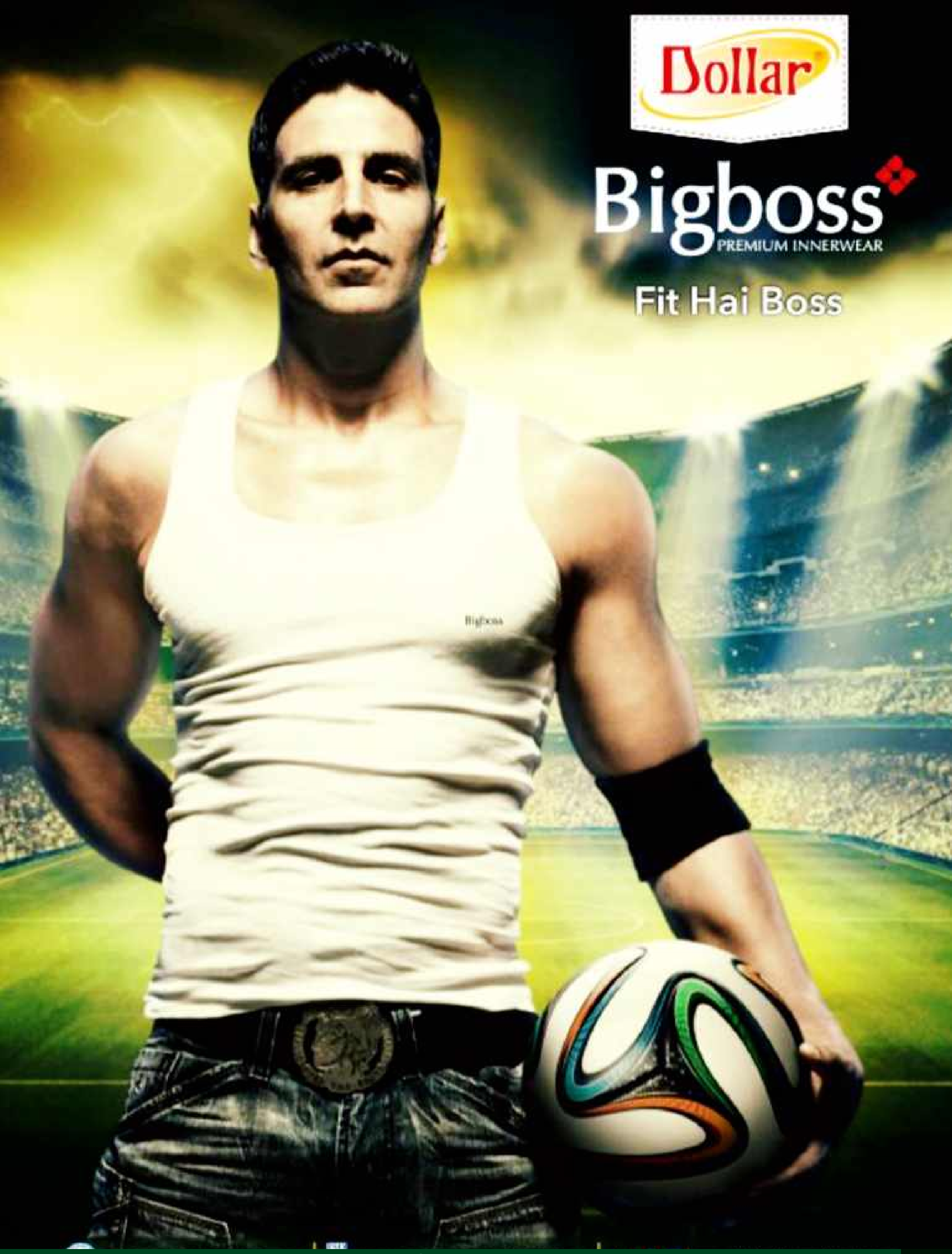
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

# जिस–जिस कर्म में अपना आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात् भय, शंका, लज्जा जिस में न हो, उन कर्मों का सेवन करना उचित है। देखो! जब कोई मिथ्याभाषण, चोरी आदि की इच्छा करता है, तभी उस के आत्मा में भय, शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है, इसलिये वह कर्म करने योग्य नहीं।

- सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास पृष्ठ २५७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर